mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-29 अंक-96 पृष्ठ-8 मूल्य-3 रूपये

रीवा

09 अप्रैल 2025 बुधवार

दैनिक मीडियाऑडीटर

रीवा, सतना से एक साथ प्रकाशित

सिराज आईपीएल में...
@ पेज 7

सुप्रीम कोर्ट में वक्फ कानून के खिलाफ याचिका, केंद्र ने भी दाखिल की कैविएट याचिका

नई दिल्ली (एजेंसी)। वक्फ संशोधन बिल को संसद के दोनों सदनों लोकसभा और राज्यसभा से पास करने के बाद राष्ट्रपति से मंजूरी मिल चुकी है। अब वक्फ बिल कानून बन गया है। हालांकि, विपक्षी दल और मुस्लिम संगठनों ने इस बिल के

● लोकसभा और राज्यसभा से पास करने के बाद राष्ट्रपति से भी मंजूरी

खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की है। अब सुप्रीम कोर्ट ने वक्फ कानून के खिलाफ याचिकाओं पर सुनवाई के तारीख तय कर दी है। सुप्रीम कोर्ट आने वाले 16 अप्रैल की तारीख को वक्फ कानून के खिलाफ याचिकाओं पर सुनवाई करेगा।

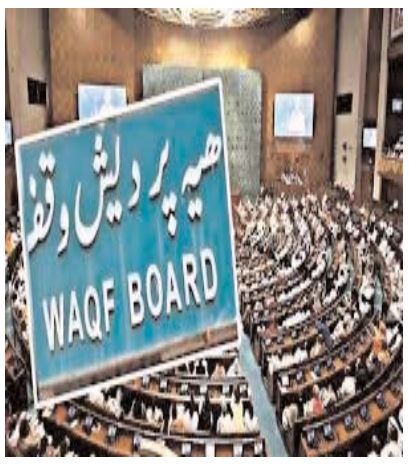

दूसरी ओर वक्फ कानून के मामले को लेकर केंद्र सरकार ने भी सुप्रीम कोर्ट में कैविएट दाखिल किया है। कैविएट याचिका में कहा गया है कि सुप्रीम कोर्ट द्वारा केंद्र सरकार को सुने बिना बिना कोई भी एकतरफा आदेश पारित नहीं किया जाए। अदालत कोई भी आदेश पारित करने से पहले केन्द्र सरकार की दलील भी सुने।

इन लोगों ने दाखिल की याचिका: वक्फ कानून को चुनौती देते हुए सुप्रीम कोर्ट में अब तक 10 से अधिक याचिकाएं दायर की जा चुकी हैं। याचिका दाखिल करने वालों में- छ्रस्य, कांग्रेस सांसद इमरान प्रतापगढ़ी, असदुद्दीन ओवैसी, कांग्रेस सांसद मोहम्मद जावेद, ढ्रस्क्क, जमीयत उलमा-ए-हिंद आदि शामिल हैं। बता दें कि प्रधान न्यायाधीश संजीव खन्ना, न्यायमूर्ति संजय कुमार और न्यायमूर्ति केवी विश्वनाथन की पीठ ने वक्फ कानून के खिलाफ याचिकाओं को तत्काल सुनवाई के लिए सूचीबद्ध करते हुए विचार करने पर सहमति व्यक्त की है।

लोकसभा-राज्यसभा में कैसे हुई वोटिंग: राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने बीते 5 अप्रैल को वक्फ (संशोधन) विधेयक, 2025 को मंजूरी दे दी थी। इस बिल को संसद के दोनों सदनों लोकसभा और राज्यसभा में देर रात तक चली बहस के बाद पारित कर दिया गया था। वक्फ बिल को लेकर हुई वोटिंग में राज्यसभा में 128 सदस्यों ने वक्फ विधेयक के पक्ष में और 95 सदस्यों ने विरोध में वोट दिया। वहीं, लोकसभा में 288 सदस्यों ने वक्फ बिल को समर्थन दिया जबकि 232 ने विरोध में मतदान किया।

संक्षिप्त समाचार

परवान चढ़ी भारत और अरब की दोस्ती

नई दिल्ली (एजेंसी)। अरब देश विश्व के उन क्षेत्रों में शामिल हैं जहां प्राकृतिक संसाधनों की भरमार है। इन देशों में राजनीतिक व्यवस्था और विकास के बीच जटिल संबंध हैं। विकास की राजनीति यहां कई सामाजिक, आर्थिक और भू-राजनीतिक कारकों से प्रभावित होती है। अरब देशों की अधिकांश सरकारें राजशाही शासनों पर आधारित हैं। सऊदी अरब, कुवैत, कतर जैसे देशों में आज भी शाही परिवारों का शासन है लेकिन बहुत कुछ बदलता हुआ भी नजर आ रहा है। अरब देशों के युवा दुनियादारी को नए

नजरिये से देख रहे हैं। अपने देश को दुनिया के साथ लेकर चल रहे हैं। एजेंडे में मॉर्डनाइजेशन और संस्कृति दोनों शामिल हैं। नया अरब आने वाले समय के लिए खुद को तैयार कर रहा है। दुबई के प्रिंस शेख हमदान, अबू धाबी के प्रिंस शेख खालिद और सऊदी अरब के प्रिंस सलमान जैसे युवा नेता विश्व के पटल पर अपनी पहचान से दुनिया का परिचय करवा रहे हैं। 42 साल के शेख हमदान, 43 साल के शेख खालिद और 39 साल के प्रिंस सलमान अरब देशों की उस नई पीढ़ी को आगे ले जा रहे हैं जो आधुनिकता के साथ-साथ बदलाव को अपना रही है। नई सोच पुरानी रुढ़ियों को चुनौती दे रही है, मजहब को कट्टरता से दुराव हो रहा है और बदलते वैश्विक हालात में अरब भी बदल रहा है। हाल के वर्षों पर नजर डालें तो अरब देशों ने विविधता को अपनाया है। पर्यटन, तकनीक, हरित ऊर्जा और शिक्षा के क्षेत्र में नए प्रयोग हो रहे हैं। जैसे सऊदी अरब की %विजन 2030% योजना, जिसका उद्देश्य तेल पर निर्भरता को कम करना और अर्थव्यवस्था को अलग दिशा देना है।

दक्षिण कोरिया की सेना ने किम जोंग के सैनिकों पर चलाई गोलियां

उत्तर कोरिया (एजेंसी)। उत्तर कोरिया और दक्षिण कोरिया के बीच तनाव एक बार फिर से गहरा हो गया है। दक्षिण कोरिया के सैनिकों ने उत्तर कोरिया

के सैनिकों की ओर चेतावनी के तौर पर गोलियां दागी हैं। दक्षिण कोरिया का कहना है कि उत्तर कोरिया के सैनिकों ने सीमा को पार किया था। इस कारण उसके सैनिकों ने उत्तर कोरिया के सैनिकों को चेतावनी देने के लिए गोलियां चलाई हैं। हालांकि, इस घटना के बाद दोनों देशों के बीच तनाव चरम पर जाने की संभावना जताई जा रही है। एपी के मुताबिक, दक्षिण कोरिया की सेना ने कहा है कि उत्तर कोरिया के सैनिकों के सीमा पार की थी। चेतावनी देने और गोलियां चलाने के बाद उत्तर कोरिया के लगभग 10 सैनिक अपनी सीमा में वापस लौट गए। दक्षिण कोरिया की सेना ने कहा है कि वह उत्तर कोरिया की ओर गतिविधियों पर कड़ी निगरानी रख रही है। उत्तर और दक्षिण कोरिया की सीमा पर कई बार हिंसक टकराव की घटनाएं होती रही हैं। बीते साल जून महीने में भी उत्तर कोरियाई सैनिकों ने सीमा का उल्लंघन किया था। इस वक्त भी दक्षिण कोरिया के सैनिकों ने चेतावनी के तौर पर गोलियां चलाई थीं। इस वक्त दक्षिण कोरियाई अधिकारियों ने इस बात का आंकलन किया था कि उत्तर कोरियाई सैनिकों ने जानबूझकर सीमा का उल्लंघन नहीं किया था। ये एक जंगली इलाका था और वहां पर सैन्य सीमा रेखा साफ रूप से दिखाई नहीं दे रही थी। हालांकि, उत्तर कोरियाई सैनिकों द्वारा मंगलवार को सीमा पार करने का कारण अब तक सामने नहीं आ पाया है।

'सीट बेल्ट नहीं तो आपका परिवार नहीं', सोनू सूद ने की अपील

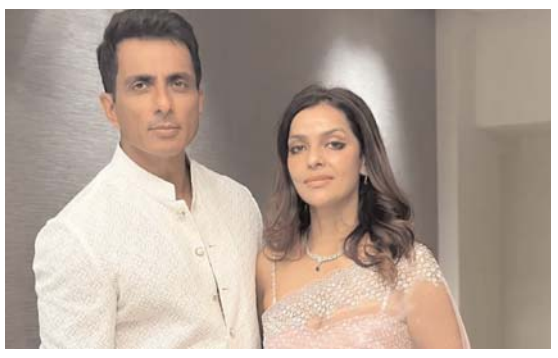

नागपुर (एजेंसी)। बॉलीवुड अभिनेता सोनू सूद ने अपनी पत्नी सोनाली की हाल ही में हुई सड़क दुर्घटना के बाद वीडियो जारी कर जनता से कार में सीट बेल्ट लगाने की अपील की है। सोनू सूद ने कहा कि कार में पीछे की सीट पर बैठे लोग भी सीट बेल्ट का अवश्य इस्तमाल करें। सोनू सूद ने कहा कि नागपुर में मेरी पत्नी सोनाली, उसकी बहन और भांजा सड़क हादसे का शिकार हुए थे। हादसे से एक मिनट पहले पत्नी ने पीछे की सीट पर बैठी बहन को कहा कि सीट बेल्ट लगाओ। कुछ ही देर बाद हादसा हो गया। सीट बेल्ट लगाने की वजह से उनकी जान बच गई। सोनू सूद ने लोगों से कहा कि सीट बेल्ट बिना पहने वाहन ना चलाए.. सीट बेल्ट नहीं तो आपका परिवार नहीं। एक्टर ने कहा कि पूरी दुनिया ने कार की हालत देखी है। आप जानते हैं कि अगर किसी ने उन्हें बचाया, तो वह सीट बेल्ट थी। सूद ने पिछली सीट पर बैठते समय सीट बेल्ट न पहनने की आम प्रथा की ओर इशारा किया। उन्होंने दुर्घटना के दिन को याद करते हुए कहा कि कार दुर्घटना तब हुई जब उनकी पत्नी सोनाली ने उनकी भाभी सुमिता से सीट बेल्ट पहनने के लिए कहा, जिससे आखिरकार उनकी जान बच गई। उन्होंने आगे कहा, ÷पिछली सीट पर बैठने वाले 100 में से 99 लोग कभी सीट बेल्ट नहीं पहनते। उन्हें लगता है कि सीट बेल्ट पहनना सिर्फ़ आगे बैठे व्यक्ति की ज़िम्मेदारी है। मैं आप सभी से अनुरोध करता हूँ कि बिना सीट बेल्ट के कार में न बैठें।÷

अब नगर निगम को हर माह 50 से 200 रुपये का यूजर चार्ज देना होगा

दिल्ली में अब फ्री नहीं उठेगा घर का कूड़ा, देने होंगे पैसे

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्लीवालों के जेब पर अतिरिक्त बोझ बढ़ने वाला है, अब दिल्ली नगर निगम घर से कूड़ा उठाने के लिए लोगों से पैसे लेने जा रही है। दिल्ली नगर निगम 7 साल बाद ठोस कचरा प्रबंधन-2018 उपनियम के तहत यूजर चार्ज वसूलने जा रही है, जिसके बाद राष्ट्रीय राजधानी के लोगो को अब नगर निगम को हर माह 50 से 200 रुपये का यूजर चार्ज देना होगा। इससे देश की राजधानी के संपत्ति मालिकों की जेब पर सीधा असर पड़ेगा। वहीं, इस चार्ज को लेकर दिल्ली की राजनीति भी गर्म हो गई है।

रिहायशी सर्पत्ति मालिकों को देना होगा इतना चार्ज: बता दें यह चार्ज संपत्तिकर के साथ ही वसूला जाएगा, यह उन मालिकों की टेंशन बढ़ा सकता है जो पहले से ही नगर निगम को संपत्ति कर दे रहे हैं। इसे ऐसे समझे कि दिल्ली के संपत्ति मालिक जब भी संपत्तिकर जमा करेंगे तो उन्हें कूड़ा उठान का यूजर चार्ज भी जमा करना होगा। यह चार्ज रिहायशी इलाकों में बढ़कर वसूला जा सकता

है। जानकारी के मुताबिक, रिहायशी सर्पत्ति मालिकों को संपत्तिकर के साथ यह चार्ज न्यूनतम 600 रुपये और अधिकतम 2400 रुपये देना पड़ सकता है।

वहीं, कॉमर्शियल प्रॉपर्टी में यह चार्ज कम से कम 6000 रुपये और अधिकतम यानी ज्यादा से ज्यादा 60,000 रुपये वार्षिक देना पड़ सकता है। इस चार्ज से नगर निगम को सालाना 150 करोड़ रुपये का अतिरिक्त राजस्व मिलने की उम्मीद है।

किस संपत्ति पर कितना लगेगा यूजर चार्ज?

नियम की मुताबिक, दिल्ली वालों को 50 वर्ग मीटर तक के रिहायशी संपत्ति पर 50 रुपये यूजर चार्ज, 50 से 200 वर्ग मीटर तक के लिए 100 रुपये चार्ज, 200 वर्ग मीटर से अधिक संपत्ति पर 200 रुपये चार्ज और स्ट्रीट वेंडरों से 100 रुपये यूजर चार्ज वसूला जाएगा।

वहीं, दुकान और खाने-पीने की जगह के लिए 500 रुपये, गेस्ट हाउस और धर्मशाला के लिए 2000 रुपये, हॉस्टल और 50 सीट वाले रेस्टोरेंट के लिए 2000 रुपये, 50 से अधिक सीट वाले रेस्टोरेंट के लिए 3000, होटल के लिए 2000, 3 स्टार होटल केलिए 3000, 3 स्टार से अधिक वाले होटल के लिए 5000, बैंक और कोचिंग सेंटर के लिए 2000 रुपये, क्लीनिक व लैब (50 बेड तक) के लिए 2000, 50 बेड से अधिक क्लीनिक, हॉस्पिटल व लैब के लिए 4000 रुपये, लघु व कुटीर उद्योग (केवल जोखिमपूर्ण कचरा) के लिए 3000 रुपये और विवाह पार्टी हॉल के लिए 5000 रुपये यूजर चार्ज देना होगा।

15 हजार की नौकरी करने वाले को 26 करोड़ का नोटिस

हरदोई (एजेंसी)। यूपी के हरदोई से एक चौंकाने वाला मामला सामने आया है। यहां एक प्राइवेट नौकरी करने वाले शख्स को इनकम टैक्स विभाग ने 26 करोड़ रुपए का नोटिस भेजा है। इस नोटिस के मिलने के बाद शख्स का परिवार परेशान है और इनकम टैक्स विभाग के चक्कर काट रहा है। तहसील शाहाबाद के पाली थाना क्षेत्र के अतरजी गांव निवासी एक निजी कर्मचारी को आयकर विभाग की ओर से 26 करोड़ रुपये का नोटिस भेजा गया है। नोटिस में उसके नाम पर हरियाणा और महाराष्ट्र (पुणे) में दो कंपनियां संचालित होने की बात कही गई है, जिन पर टैक्स बकाया बताया गया है। यह जानकारी मिलते ही पीड़ित राजेश कुमार के होश उड़ गए और अब पीड़ित आयकर विभाग के चक्कर लगाने को मजबूर है। दरअसल राजेश कुमार दिल्ली की एक मोबाइल कंपनी में 2022 से 15 हजार रुपये महीने की तनख्वाह पर काम कर रहा है। इससे पहले भी वह दो अन्य निजी कंपनियों में नौकरी कर चुका है।

सीएम ममता ने महुआ मोइत्रा को दी पार्टी से निलंबित करने की चेतावनी

कल्याण बनर्जी से हुआ था विवाद

पश्चिम बंगाल (एजेंसी)। तृणमूल कांग्रेस की प्रमुख और पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने पार्टी की सांसद महुआ मोइत्रा को कड़ी चेतावनी जारी की है। सूत्रों के मुताबिक, सीएम ममता ने महुआ मोइत्रा को पार्टी से निलंबित करने की चेतावनी दी है। जानकारी के मुताबिक, तृणमूल कांग्रेस के ही दो सांसदों महुआ मोइत्रा और कल्याण बनर्जी के बहस हुई थी। इसी के बाद महुआ को ये चेतावनी दी गई है। आइए जानते हैं इस पूरे मामले के बारे में।

सूत्रों की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक, तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) के नेता डेरेक ओबेरियन ने ममता बनर्जी को पूरे घटनाक्रम की जानकारी दी है। इसके बाद एक महिला राज्यसभा सांसद के माध्यम से महुआ मोइत्रा को सीएम ममता बनर्जी का संदेश पहुंचाया गया है। सीएम ममता के संदेश में सांसद महुआ मोइत्रा को कड़ी कार्रवाई और निलंबन की चेतावनी दी गई है। सूत्रों के मुताबिक, महुआ मोइत्रा और कल्याण बनर्जी के बीच कई मुद्दों को लेकर तनाव है। महुआ मोइत्रा कथित तौर कल्याण बनर्जी से इसलिए नाराज हैं क्योंकि उन्हें लोकसभा में बोलने का पर्याप्त समय नहीं दिया गया। कल्याण बनर्जी कई सांसदों के बीच फ़्लोर टाइम को मैनेज करने के लिए ज़िम्मेदार हैं। महुआ मोइत्रा सदन में ज़्यादातर मुद्दों पर

अपनी राय रखना चाहती हैं। हालांकि, उन्हें कथित तौर पर कई मौकों पर इससे वंचित किया गया जिससे वे निराश हैं। जानकारी के मुताबिक, महुआ ने कथित तौर पर कल्याण बनर्जी और उनकी बेटी के खिलाफ़ अभद्र भाषा का इस्तेमाल किया था। एक बार उन्होंने कल्याण बनर्जी को %छोटो लोक% (बंगाली में नीच व्यक्ति) कहा था जिस कारण बनर्जी बहुत आहत हुए थे।

मुस्लिम लड़की से दोस्ती के कारण की हत्या

2 लड़कों ने देर रात किया मर्डर

नई दिल्ली (एजेंसी)। राजधानी दिल्ली में अपराध की खौफनाक वारदात की खबर सामने आ रही है। दिल्ली के गोकुलपुरी क्षेत्र में एक युवक की हत्या कर दी गई है। जानकारी के मुताबिक, दो मुस्लिम लड़कों पर इस हत्या का आरोप लगा है। हैरान करने वाली बात ये भी है कि युवक की हत्या का कारण उसका एक मुस्लिम लड़की से दोस्ती होना बताया जा रहा है। आइए जानते हैं इस खौफनाक वारदात के बारे में सबकुछ।

दिल्ली के गोकुलपुरी इलाके में एक युवक की हत्या की घटना ने सनसनी मचा दी है। मारे गए युवक की पहचान हिमांशु के रूप में हुई है। जानकारी के मुताबिक, हिमांशु की दोस्ती आरोपी की बहन से थी इसी बात को लेकर लड़की पक्ष जो कि मुस्लिम है वह नाराज था। हत्या का कारण इसी को बताया जा रहा है।

दिल्ली के गोकुलपुरी इलाके में हिमांशु नाम के युवक की हत्या में दो मुस्लिम लड़कों के शामिल होने की बात सामने आ रही है। जानकारी के मुताबिक, आरोप लगा है कि युवती के भाई शाहरुख ने अपने साथी के

साथ मिल कर हिमांशु की हत्या की है। इन्होंने देर रात इस हत्या की वारदात को अंजाम दिया है। जानकारी के मुताबिक, मृतक जब नाबालिग था तब उसपर भी आपराधिक मामले दर्ज थे। हिमांशु पर गोकुलपुरी थाने में हत्या की कोशिश का मुकद्दमा दर्ज था।

गोकुलपुरी इलाके में मुस्लिम लड़की से दोस्ती के कारण युवक की हत्या में जिन दो लोगों पर आरोप लगा है उनके नाम साहिल और शाहरुख बताए जा रहे हैं। दोनों लड़की के भाई हैं। पुलिस ने हत्या के इस मामले में कार्रवाई करते हुए दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। लड़की नाबालिग बताई जा रही है।

तिहाड़ जेल में कैदियों को मिलेगा ओआरएस और नींबू पानी

गर्मी से बचाने के लिए बनाई योजना

लखनऊ (एजेंसी)। , राष्ट्रीय राजधानी में गर्मी का सितम शुरू हो गया है। ऐसे में दिल्ली की तिहाड़ जेल में गर्मी के मौसम में कैदियों को ठंडक पहुंचाने के लिए अधिकारियों ने एक योजना तैयार की है। इस योजना के तहत कैदियों को हर दिन दो नींबू और गर्मी से बचाने वाली चादरें मुहैया कराई जाएंगी। जानकारी के लिए बता दें कि तिहाड़ जेल को साल 1958 में स्थापित किया गया था और यह भारत के सबसे बड़े जेल परिसरों में से एक है। तिहाड़ जेल 400 एकड़ से ज्यादा क्षेत्र में बनी है, जिसमें नौ जेल शामिल हैं।

जेल के एक अधिकारी ने बताया कि गर्मी से बचाव के उपाय उनकी मौसमी योजना का हिस्सा हैं। उन्होंने बताया, ÷चाहे गर्मी हो या सर्दी, हम तिहाड़ जेल के नियमों के अनुसार कैदियों के लिए उचित योजना का पालन करते हैं। हम तीन महीने अप्रैल, मई और जून के दौरान प्रत्येक कैदी को प्रतिदिन

दो नींबू देंगे जिससे उनके शरीर में पानी की मात्रा को बरकरार रखा जा सके।÷

अधिकारी ने बताया कि कैदियों के शरीर में पानी की मात्रा को बरकरार रखने के लिए उन्हें पर्याप्त मात्रा में ह्रऋस्र भी दिया जाएगा। जेल अधिकारियों ने टेंपरेचर को कुछ डिग्री कम बनाए रखने के लिए कोठरियों के अंदर गर्मी से बचाने वाली चादरें लगाने की भी योजना बनाई है। एक व्यक्ति ने कहा, ÷ये चादरें गर्मियों के दौरान बहुत उपयोगी होती हैं क्योंकि ये कोठरियों का तापमान सामान्य रखती हैं और हवा आने-जाने देती हैं।÷

इस बीच, दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने तिहाड़ जेल को शहर के बाहरी इलाके में ट्रांसफर करने की योजना का ऐलान किया है। इसके लिए 2025-26 के बजट में सर्वेक्षण और स्थानांतरण से संबंधित परामर्श सेवाओं के लिए 10 करोड़ रुपये अलॉट किए गए हैं।

अधिकारी ने कहा कि जेल के अंदर किसी भी कैदी को विशेष नहीं माना जाता है। उन्होंने बताया, ÷हम जेल के नियमों का सख्ती से पालन करते हैं। हम किसी भी कैदी को कोई विशेष सुविधा नहीं देते हैं। हालांकि, हम 60 वर्ष या उससे अधिक आयु के कैदियों पर कड़ी निगरानी रखते हैं। चिकित्सक रोजाना उनकी जांच करते हैं।

पुलिस के हत्थे चढ़े 5 अवैध बांग्लादेशी

नई दिल्ली (एजेंसी)। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में अवैध बांग्लादेशियों पर पुलिस का कड़ा शिकंजा है। दिल्ली के उत्तर-पश्चिम जिला पुलिस को बड़ी सफलता हाथ लगी है। जहांगीर पुरी मेट्रो स्टेशन के पास से 5 अवैध बांग्लादेशी नागरिकों को गिरफ्तार किया गया है। इनके पास से प्रतिबंधित ढ्रस्ढ्ढ ऐप से लैस सात मोबाइल फोन भी बरामद किए गए हैं, जिनका उपयोग ये अपने परिवारजनों से संपर्क साधने के लिए कर रहे थे। पुलिस के अनुसार, इन सभी नागरिकों ने भारत में अवैध रूप से घुसपैठ की थी। ट्रेनों के जरिए दिल्ली पहुंचे थे। जांच में खुलासा हुआ है कि ये लोग अपने असली पहचान को छुपाने के लिए ट्रांसजेंडर का रूप धारण कर भीख मांगने और अन्य गतिविधियों में संलिप्त थे। उन्होंने पकड़ से बचने के लिए हार्मोनल इंजेक्शन व सर्जरी का भी सहारा लिया था।

7 दिन की रैकी के बाद गिरफ्तार: दिल्ली पुलिस ने उत्तर-पश्चिम जिले में अवैध बांग्लादेशी नागरिकों के खिलाफ विशेष अभियान शुरू किया है। इसी क्रम में जहांगीर पुरी और महेन्द्रा पार्क थाना क्षेत्र में एक विशेष टीम गठित की गई थी। 7 दिनों की निगरानी और तकनीकी विश्लेषण के बाद 7 अप्रैल को एक सटीक सूचना के आधार पर कार्रवाई की गई। दिल्ली पुलिस की टीम ने सुबह तड़के जाल बिछाकर सभी 5 संदिग्धों को धर दबोचा है। इन सभी गिरफ्तार किए गए अवैध बांग्लादेशियों के नाम का भी खुलासा हो गया है।

राज्य कृषि विस्तार एवं प्रशिक्षण संस्थान द्वारा 1530 अधिकारियों को दिया गया प्रशिक्षण -कृषि मंत्री कंषाना

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। किसान कल्याण एवं कृषि विकास मंत्री श्री एदल सिंह कंषाना ने कहा है कि राज्य सरकार खेती को लाभ का धंधा बनाने के लिए लगातार प्रयास कर रही है। खेती की आधुनिक पद्धतियों, कृषि यंत्रों एवं नवीनतम तकनीकों की जानकारी कृषि विभाग के अधिकारियों को समय-समय पर दी जा रही है, जिससे कि वे क्षेत्र में जाकर किसानों को उनसे अवगत करा सकें। राज्य कृषि विस्तार एवं प्रशिक्षण संस्थान द्वारा वर्ष 2024-25 में 57 प्रशिक्षणों के द्वारा 1530 अधिकारियों को प्रशिक्षण प्रदान किया गया। कृषि मंत्री श्री कंषाना ने कहा कि राज्य कृषि विस्तार एवं प्रशिक्षण संस्थान बरखेड़ी कला, भोपाल कृषि की आवश्यकता अनुसार विभिन्न विषयों पर विभागीय अधिकारियों को प्रशिक्षण प्रदान करता है। उन्होंने कहा कि विभाग की आत्मा योजना अंतर्गत वर्ष 2024-25 में कृषि एवं संवर्गीय विभाग के अधिकारियों के 54 प्रशिक्षण आयोजित किए गए जिससे 1338 प्रशिक्षणार्थियों को लाभ मिला। आत्मा योजना क्रियान्वयन के लिए 2 रिव्यू वर्कशॉप के माध्यम से 155 अधिकारियों को प्रशिक्षण दिया गया। स्टेट लेवल वर्कशॉप ऑन ट्रेनिंग नीड असेसमेंट के प्रशिक्षण द्वारा 37 अधिकारियों को प्रशिक्षित किया गया। मंत्री श्री कंषाना ने कहा कि पिछले एक वर्ष में 30 विषयों पर प्रशिक्षण आयोजित किए गए। इनमें सॉइल हेल्थ मैनेजमेंट, एग्रो फॉरेस्ट्री फॉर इंक्रीजिंग फार्मर्स इनकम, फार्म मैकेनाइजेशन, पोस्ट हार्वेस्ट मैनेजमेंट इन एग्रीकल्चर एंड हॉर्टिकल्चर क्रॉप्स, ऑर्गेनिक फार्मिंग एंड सर्टिफिकेशन इश्यूज एंड स्ट्रेटजीज, इंटीग्रेटेड फार्मिंग सिस्टम, स्टैंडर्ड ऑपरेटिंग प्रोसीजर फॉर क्वालिटी कंट्रोल एंड लीगल एस्पेक्ट्स, ओरिएंटेशन ऑन फ्लैगशिप स्कीम्स, ऑफिस मैनेजमेंट फॉर एग्रीकल्चर एंड एलाइड डिपार्मेंट (एग्जीक्यूटिव), ऑफिस मैनेजमेंट फॉर एग्रीकल्चर एंड एलाइड डिपार्टमेंट (मिनिस्टीरियल), मार्केट लेड एक्सटेंशन एंड मार्केट लिंकेज, लीडरशिप डेवलपमेंट एंड टीम बिल्डिंग, इंटीग्रेटेड न्यूट्रिएंट मैनेजमेंट, सस्टेनेबल लाइवस्टॉक एंड फोडर प्रोडक्शन, मिलेट्स प्रोडक्शन, रिसोर्स कंजर्वेशन टेक्नोलॉजी इन एग्रीकल्चर, आईटी इन एग्रीकल्चर पर सुपरवाइजरी ऑफिसर्स, जीआई आईपीआर और डब्ल्यूटीओ, रिफ्रेशर ट्रेनिंग कम वर्कशॉप फॉर खरीफ क्रॉप्स, रिफ्रेशर ट्रेनिंग कम वर्कशॉप फॉर रबी क्रॉप्स, सॉइल ट्रेनिंग एंड न्यूट्रीशनल रिकमेंडेशन फॉर एग्रीकल्चर क्रॉप्स, जेंडर सेंसटाइजेशन एंड जेंडर बजटिंग, फार्मर प्रोड्यूसर ऑर्गेनाइजेशन एंड कंपनीज, मैनेजमेंट ऑफ मेजर पॉलिफेगस इंसेक्ट्स पेस्टस, आत्मनिर्भर भारत मिशन इन एग्रीकल्चर एंड एलाइड सेक्टर, स्वच्छता एक्शन प्लान, रेनफेड फार्मिंग, प्रेसीजन फार्मिंग एग्रीकल्चर, रिफ्रेशर ट्रेनिंग फॉर आत्मा फंशनरीज और रिफ्रेशर ट्रेनिंग फॉर फॉर्म मैनेजर विषयों पर प्रशिक्षण दिया गया।

54 हजार से अधिक बने जलदूत

भोपाल। जल संरक्षण को जन-आंदोलन बनाने की दिशा में एक अहम कदम उठाते हुए राज्य सरकार ने जल गंगा संवर्धन अभियान को पोर्टल पर मेगा एवेंट के रूप में लॉन्च किया है। इस अभियान का उद्देश्य समाज की भागीदारी से जल संग्रहण संरचनाओं का निर्माण, सफाई, मरम्मत और जल प्रदूषण में कमी जैसे कार्यों को बढ़ावा देना है। युवा कार्यक्रम और खेल मंत्रालय द्वारा विकसित पोर्टल एक डिजिटल प्लेटफार्म है जो युवाओं को राष्ट्र विकास के विविध कार्यक्रमों से जुड़कर सकारात्मक बदलाव के अवसर प्रदान करता है। इस पोर्टल के माध्यम से जिले अपने जल संरक्षण से जुड़े कार्यक्रमों को पब्लिश करेंगे और युवाओं को जल दूत के रूप में पंजीकृत कर उनकी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करेंगे।

निष्ठा, धैर्य के साथ न्याय संगत दलील देना लोक अभियोजक का दायित्वः राज्यपाल श्री पटेल

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने कहा है कि निष्ठा और धैर्य के साथ न्यायसंगत दलील देना लोक अभियोजक का दायित्व है। उन्होंने कहा कि तथ्य ही सत्य है। तथ्यों पर आधारित दलील का कानून स्वाभाविक रूप से साथ देता है। उन्होंने प्रशिक्षु अधिकारियों से कहा कि क्षमताओं और कार्यकुशलता को विकसित कर विभाग को और अधिक ऊँचाइयों पर पहुँचाने की चुनौती में प्रशिक्षण में प्राप्त ज्ञान तथा अनुभवी प्रशिक्षकों का मार्गदर्शन सहयोगी होगा।

राज्यपाल श्री पटेल सोमवार को केन्द्रीय पुलिस प्रशिक्षण अकादमी (सीएपीटी) भोपाल में आयोजित सहायक लोक अभियोजन अधिकारियों के प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन समारोह को संबोधित कर रहे थे। राज्यपाल श्री पटेल ने इस अवसर पर 10 सहायक लोक अभियोजकों को प्रशिक्षण प्रमाण पत्र प्रदान किए। उन्होंने अकादमी परिसर में गोल्डन चंपा का पौधा भी लगाया।

राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि न्यायपालिका लोकतंत्र का वो स्तम्भ है, जिस पर नागरिकों की गहरी आस्था है। वह उसे सबसे अधिक आदर भाव से देखते हैं। न्याय व्यवस्था में अभियोजन अधिकारियों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है, बहुआयामी है। उनकी जिम्मेदारी पीड़ितों के लिए मुकदमा चलाने तक सीमित नहीं है। कोर्ट के समक्ष सबूत पेश कर दोषी को सजा और पीड़ित को न्याय दिलाना है। अभियोजन अधिकारी के रूप में अपराध नियंत्रण में पुलिस की जांच में गुणवत्ता लाने, शासकीय विभागों को कानूनी सलाह देने, प्रकरणों में अपील करवाने और पीड़ितों को मुआवजा दिलाने में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण होगी। उन्होंने कहा कि अभियोजन अधिकारी के रूप में उनके पास वंचित, गरीब और पीड़ित

व्यक्ति अत्याचार, अनाचार के खिलाफ न्याय के उसके संघर्ष का रक्षक मानकर आएगा। उस समय उनका संवेदनशील व्यवहार, सहानुभूति और सहयोग न्याय में उसके विश्वास को मजबूत बनाएगा।राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि सहायक लोक अभियोजक के रूप में उनका चयन कड़ी प्रतिस्पर्धा के बाद हुआ है, क्योंकि सरकारी नौकरी व्यवसाय मात्र नहीं है। यह वंचितों के जीवन में खुशहाली लाकर देश, प्रदेश और समाज के विकास के द्वारा सुखद भविष्य बनाने की प्रतिबद्ध सेवा का संकल्प है। उन्होंने लोक सेवक के रूप में इस चुनौती को स्वीकार करने के लिए प्रशिक्षु अधिकारियों का अभिनंदन किया। यह अपेक्षा की है कि न्याय के मंदिर में वह निष्ठा और ईमानदारी के साथ कार्य के उच्च मानदण्ड स्थापित करेंगे।

लोकायुक्त न्यायमूर्ति सत्येन्द्र कुमार सिंह ने कहा कि लोक शांति राज्य का दायित्व है। लोक शांति के लिए अपराधिक न्याय प्रणाली का मजबूत होना आधारभूत आवश्यकता है। इस कार्य में लोक अभियोजकों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। उन्होंने प्रशिक्षु अधिकारियों से कहा कि वे न्याय को सुनिश्चित करने के लिए अभियोजन अधिकारी के विहित दायित्वों का निर्वहन जितनी कुशलता और निष्ठा से करेंगे, परिणाम उतने ही अच्छे मिलेंगे। अपर मुख्य सचिव गृह श्री जे. एन. कंसोटिया ने कहा कि नए विचारों और ऊर्जा के साथ सहायक लोक अभियोजक कार्य को नौकरी की तरह नहीं, सेवा के रुप में करें। उन्होंने न्याय व्यवस्था में लोक अभियोजकों की भूमिका पर भी प्रकाश डाला और शुभकामनाएं दी।

नगर निगमों को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने में राज्य सरकार की और से की जायेगी हर संभव मदद

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। नगरीय विकास एवं आवास मंत्री श्री कैलाश विजयवर्गीय ने कहा है कि प्रदेश के 16 नगर निगमों को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर और सशक्त बनाने में राज्य सरकार की और से हरसंभव मदद की जायेगी। उन्होंने कहा कि निकायों को और अधिक अधिकार देकर सशक्त बनाया जायेगा। नगर निगम महापौरों को सुरक्षा की दृष्टि से गनमैन दिलाने के लिये गृह विभाग को पत्र लिखा जायेगा। उन्होंने नगर निगम आयुक्तों को विकास कार्यों में तेजी लाने के लिये महापौर से बेहतर समन्वय रखने के निर्देश भी दिये। मंत्री श्री विजयवर्गीय सोमवार को मंत्रालय में प्रदेश के नगर निगम महापौर और आयुक्तों की बैठक को संबोधित कर रहे थे। बैठक में मुख्य रूप से इंदौर महापौर श्री पुष्यमित्र भार्गव, भोपाल महापौर श्रीमती मालती राय और नगरीय प्रशासन विकास आयुक्त श्री सिबि चक्रवर्ती भी मौजूद थे।

बैठक में 19 जुलाई, 2024 को नगरीय विकास मंत्री की अध्यक्षता में हुई बैठक में दिये गये निर्देशों के पालन की समीक्षा की गयी। बैठक में मंत्री श्री विजयवर्गीय ने कहा कि अवैध कॉलोनी को वैधता देते समय इस बात का ख्याल रखा जाये कि इससे नगर के विकास में रुकावट न आये। बैठक में सौर ऊर्जा के माध्यम से नगरीय निकायों के बिजली बिलों में कमी लाने पर चर्चा की गयी।

ज्ञान दान अभियान की प्रेरणादायक शुरुआत

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्यप्रदेश राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन द्वारा 'ज्ञान दान अभियान' की शुरुआत की गई है। इस सराहनीय पहल का शुभारंभ राज्य कार्यालय में मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्रीमती हर्षिका सिंह ने किया। अभियान का जरूरतमंद विद्यार्थियों तक प्रतियोगी परीक्षाओं और शैक्षणिक किताबों को पहुँचाना है, जो संसाधनों की कमी के कारण अपनी पढ़ाई में पीछे रह जाते हैं। सीईओ श्रीमती सिंह ने आमजन से आग्रह किया गया है कि वे पुरानी व उपयोग में न आने वाली यूपीएससी, एसएससी, बैंकिंग, स्कूल-कॉलेज स्तर की किताबें और सामान्य ज्ञान व संदर्भ ग्रंथ दान कर सकते हैं। ये पुस्तकें आजीविका मिशन के राज्य, जिला व ब्लॉक कार्यालयों, सीटीसी-सामुदायिक प्रशिक्षण केंद्र या गांवों में मौजूद स्व-सहायता समूहों, ग्राम संगठन, संकुल स्तरीय संगठनों के कार्यालयों के माध्यम से एकत्र की जाएंगी। यह अभियान किताबों का आदान-प्रदान कर विद्यार्थियों का भविष्य संवारने की एक सशक्त मुहिम है। आमजन से अपील है कि वे इस अभियान से जुड़कर किसी के सपनों को उड़ान देने में भागीदार बनें।

बनासकांठा दुर्घटना के प्रभावित परिवारों को हर संभव की जा रही है मदद

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। गत दिनों गुजरात के बनासकांठा जिले में स्थित पटाखा फैक्ट्री में हुए विस्फोट में हरदा जिले के प्रभावित परिवारों को प्रशासन द्वारा हर संभव मदद देने की कार्यवाही लगातार जारी है। कलेक्टर श्री आदित्य सिंह ने बताया कि दुर्घटना में मजदूर परिवारों के कुल 11 सदस्यों की मृत्यु हो गई थी। इन सभी 11 मृतकों के परिजन को प्रधानमंत्री सहायता कोष से दो-दो लाख रुपए तथा गुजरात शासन की ओर से चार-चार लाख रुपए की मदद स्वीकृत की गई है। इसके अलावा सभी 11 मृतकों के परिजन को मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री स्वेच्छानुदान की राशि से 2-2 लाख रुपए की मदद मृतकों के परिजनों को दी जा चुकी है। साथ ही संबल अनुग्रह योजना से 3 मृतक श्रमिक के परिवारों को चार-चार लाख रुपए की मदद भी दी गई है। हरदा कलेक्टर श्री सिंह ने बताया कि संबल योजना में पंजीबद्ध 8 मृतक मजदूरों के परिजनों को अंत्येष्टि सहायता के रूप में पांच-पांच हजार रुपए की सहायता भी दी गई है। उन्होंने बताया कि 2 घायल मजदूरों को प्रधानमंत्री राहत कोष से 50-50 हजार रुपए तथा गुजरात सरकार की ओर से 50-50 हजार रुपए की सहायता देने की कार्यवाही जारी है। कलेक्टर श्री सिंह ने बताया कि दोनों घायल मजदूरों को मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री स्वेच्छानुदान मद से 50-50 हजार रुपए की मदद दी जा चुकी है। उन्होंने बताया कि प्रभावित परिवारों में से राष्ट्रीय परिवार सहायता योजना के तहत पात्र पाए गए 2 परिवारों को 20-20 हजार रुपए स्वीकृत करने की कार्यवाही भी की जा रही है। इसके अलावा कुल 13 प्रभावित परिवारों में से 8 परिवारों को राशन पात्रता पर्ची जारी कर दी गई है और उन्हें अप्रैल माह का राशन प्रदान कर दिया गया है।

विद्युत भार (लोड) स्वीकृत करवायें एवं जुर्माने से बचें

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी द्वारा इन दिनों निम्नदाब के गैर घरेलू और औद्योगिक (पॉवर) उपभोक्ताओं के परिसरों का व्यापक चैकिंग अभियान संचालित किया जा रहा है। इस अभियान के दौरान उपभोक्ता परिसर में विद्युत भार (लोड) में वृद्धि के प्रकरण पकड़े जा रहे हैं। कंपनी द्वारा विद्युत भार की वृद्धि स्वेच्छा से कराने के लिए उपभोक्ताओं को जागरूक करने का भी अभियान इन दिनों चलाया जा रहा है। कंपनी ने उपभोक्ताओं से अपील की है कि वे कंपनी के पोर्टल पर स्वेच्छिक ऑनलाइन आवेदन कर भार वृद्धि करा लें। बिजली कंपनी में नवीन कनेक्शन के लिए जब कोई व्यक्ति अधिकृत आवेदन देता है तो उसके परिसर में भार (लोड) की गणना कर भार निर्धारित किया जाता है। इस प्रक्रिया में नया कनेक्शन देने के लिए बिजली कर्मचारी परिसर का लोड सर्वे करते हैं। यह भार (लोड) विद्युत प्रणाली में जोड़ा जाता है। इसलिए इसे संयोजित भार या कनेक्टेड लोड कहा जाता है। उपभोक्ता को बिजली कंपनी के साथ सहयोग कर भार की सही गणना कराना चाहिए ताकि विद्युत प्रणाली सुचारू रूप से संचालित की जा सके। उपभोक्ता द्वारा परिसर में कनेक्शन लेने के कुछ अन्तराल बाद कुछ नये विद्युत उपकरणों को स्थापित कर भार बढ़ा लिया जाता है।

निर्माण कार्यों की गुणवत्ता सुधार के लिये प्रदेशभर में हुआ औचक निरीक्षण, 35 कार्यों का किया गया मूल्यांकन

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। प्रदेश में निर्माण कार्यों की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिये लोक निर्माण विभाग द्वारा निर्माण कार्यों के औचक निरीक्षण की नवीन पहल प्रारंभ की गई है। इस पहल में हर माह दो बार सॉफ्टवेयर से रैंडमली चयनित दलों, जिलों, निर्माण कार्यों और सामग्री के सैंपल लेने के स्थानों का औचक निरीक्षण किया जाएगा।इसी क्रम में 5 अप्रैल 2025 को प्रदेश के 7 जिलों हरदा, बालाघाट, अशोकनगर, अलीराजपुर, सीधी, उज्जैन एवं टीकमगढ़ में निर्माण कार्यों का औचक निरीक्षण किया गया। निरीक्षण अभियान के अंतर्गत कुल 35 निर्माण कार्यों का चयन रैंडम आधार पर किया गया, जिनमें 14 कार्य पीडब्ल्यूडी (सड़क/पुल), 13 कार्य पीआईयू, 6 कार्य मध्यप्रदेश सड़क विकास निगम, 1 कार्य मध्यप्रदेश भवन विकास निगम एवं 1 कार्य पीडब्ल्यूडी (एनएच) से संबंधित थे। निरीक्षण के बाद प्राप्त प्रतिवेदन की समीक्षा वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग बैठक में की गई, प्रबंध संचालक सड़क विकास निगम श्री भरत यादव, प्रमुख अभियंता श्री के.पी.एस. राणा, प्रमुख अभियंता श्री एस.आर. बघेल, सभी मुख्य अभियंता एवं निरीक्षणकर्ता अधिकारी उपस्थित रहे। समीक्षा में टीकमगढ़ जिले के दिगोड़ा-मोहनगढ़ मार्ग की गुणवत्ता को लेकर निरीक्षणकर्ताओं ने सराहना की। परफॉर्मेंस गारंटी की अवधि समाप्त होने के दो वर्ष बाद भी मार्ग की स्थिति उत्कृष्ट पाई गई। इसके लिए निर्माण कार्य के दौरान पदस्थ श्री अनिल श्रीवास्तव एवं श्री पी.के. जोशी की विशेष प्रशंसा की गई।

बालाघाट जिले के पीनडके पर-खुशीपार-फोगलटोला मार्ग पर गुणवत्ता में गंभीर कमी पाई गई, जिसमें कस्ट की मोटाई कम पाई गई तथा सीसी कार्य में जॉइंट कटिंग समय पर नहीं की गई। इस लापरवाही के लिए निर्माण एजेंसी 'श्री मोहनी कंस्ट्रक्शन' को ब्लैक लिस्ट में डालने एवं संबंधित कार्यपालन यंत्री, एसडीओ व उपयंत्री को नोटिस जारी करने के निर्देश दिए गए। इसी प्रकार अशोकनगर जिले के बररी-नलखेड़ा मार्ग के निर्माण कार्य की खराब गुणवत्ता को देखते हुए निर्माण एजेंसी 'अवनी कंस्ट्रक्शन' को भी ब्लैक लिस्ट में दर्ज करने के आदेश दिए गए हैं। समीक्षा बैठक में एमडी एमपीआरडीसी श्री भरत यादव ने समस्त अधिकारियों को निर्देशित किया गया कि आवश्यक सुधार कार्य शीघ्र कर प्रतिवेदन प्रस्तुत करें। इसके साथ ही मुख्यमंत्री हेल्पलाइन एवं विधानसभा के लंबित प्रकरणों का समयबद्ध निराकरण सुनिश्चित करने एवं ई-ऑफिस के माध्यम से कार्य संपादन करने के लिये भी निर्देश जारी किए गए हैं।

पारपरिक चिकित्सा के संरक्षण की दिशा में झाबुआ में ऐतिहासिक पहल

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। महिला बाल विकास मंत्री सुश्री निर्मला भूरिया ने कहा कि वर्तमान में पारम्परिक चिकित्सा पद्धति और औषधीय वनस्पतियों से जुड़े सदियों पूराने ज्ञान को सहेजने और अगली पीढ़ी तक पहुँचाना अत्यंत आवश्यक है। झाबुआ जिले में पारम्परिक औषधीय ज्ञान को संरक्षित करने की ऐतिहासिक पहल की गई है। डुंगर बाबा नी जड़ी बूटियों नु जोवनार कार्यशाला का आयोजन सराहनीय है। उन्होंने कहा कि झाबुआ की धरती पर लोक ज्ञान का अपार भंडार है। इस कार्यशाला में 75 से अधिक पारम्परिक जड़ी-बूटी विशेषज्ञों को एकत्रित

किया गया है। मंत्री सुश्री भूरिया ने कहा कि जिले के सभी विकासखंडों से एकत्रितहुएइन विशेषज्ञों ने इस अंचल में पाये जाने वाले जड़ी बूटियों का परम्परागत ज्ञान साझा किया है। उन्होंने कहा कि यह परम्परागत ज्ञान विलुप्त न हो जाये और आने वाली पीढ़ियों तक इसके हस्तांतरण के उद्देश्य से कार्यशाला का आयोजन किया गया है। मंत्री सुश्री भूरिया ने कहा कि पूरी दुनिया ने कोरोना काल में आयुर्वेद की शक्ति को पहचाना है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में आयुष चिकित्सा पद्धतियों को अपनाने पर जोर दिया है और देश भर में आयुर्वेद का विस्तार हुआ है।

उन्होंने कहा कि ज्ञान बांटने से बढ़ता है और इसी से परम्परागत ज्ञान को लिपीबद्ध करने से इसको संरक्षित किया जा सकेगा। मंत्री सुश्री भूरिया ने कहा कि भविष्य में सभी जानकारियों का सुव्यवस्थित संकलन कर हिन्दी और अंग्रेजी में दस्तावेज तैयार किये जायेगें। इसमें जड़ी बूटियों के नाम, स्त्रोत, प्रयोग विधि, मात्रा, उपलब्धता और उपचार की प्रक्रिया को विस्तार से दर्ज किया जायेगा।

जल संरचनाओं के संरक्षण और भविष्य की जल आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये सशक्त कदम

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में प्रदेश में जल गंगा संवर्धन अभियान सफलतापूर्वक जारी हैं। यह अभियान जल संरक्षण की दिशा में एक कदम है। इसमें हर नागरिक को जोड़ने का उद्देश्य है, जिससे हम अपने पर्यावरण को सुरक्षित बना सकें और भावी की पीढ़ी को जल संकट से मुक्ति दिला सकें।

यह अभियान जल संरचनाओं के सतत संरक्षण और भविष्य की जल आवश्यकतों की पूर्ति के लिये एक सशक्त कदम है। राज्य में अभियान अन्तर्गत स्थनीय जनप्रतिनिधियों, आमजनों, प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा जल बचाव के लिये विभिन्न गतिविधियाँ की जा रही हैं। बैतूल जिले में जल स्त्रोतों की स्वच्छता और संरक्षण के लिए जनभागीदारी से एक प्रेरणादायी पहल की गई। बैतूल के जयप्रकाश वार्ड स्थित माचना नदी के दामादैयात घाट पर एक वृहद नदी स्वच्छता अभियान का आयोजन किया गया, जिसमें इस विशेष अभियान में केंद्रीय राज्य मंत्री एवं बैतूल सांसद श्री डी.डी. उइके सहित जनप्रतिनिधियों से लेकर आम नागरिकों तक सभी ने बढ़-चढ़कर भागीदारी की। इस अवसर पर केंद्रीय राज्य मंत्री श्री उईके ने जल संकट की गंभीरता पर प्रकाश डालते हुए नागरिकों से आह्वान किया कि वे जल संरक्षण को जीवन का अभिन्न हिस्सा बनाएं।

जल गंगा संवर्धन अभियान एवं ग्रीष्म ऋतु को देखते हुए नगर परिषद शाहपुर द्वारा नगर के प्रमुख स्थानों नाचनखेड़ा फाटा, बस स्टैंड क्षेत्र, बम्भाडा फाटा आदि स्थानों पर सार्वजनिक प्याऊ की व्यवस्था की गई है। इस सुनियोजित व्यवस्था से राहगीरों, नगरवासियों, व्यवसायियों को शीतल पेयजल की सुविधा मिल रही है। शहडोल में सेल्फी लेकर दिया गया जल संरक्षण एवं संवर्धन का संदेशजल को सहेजने एवं संरक्षण हेतु जल संवर्धन अभियान चलाया जा रहा है।

हाईटेंशन लाइनों से दूर लगाएं फसल और घास की ढेरियां

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्यक्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी ने आम जनता तथा खेतों में काम करने वाले किसानों को आगाह किया है कि वे अपनी फसलों और घास की ढेरियां हाईटेंशन लाइनों से दूर लगाएं। कंपनी ने कहा है कि जरा सी असावधानी बड़ी दुर्घटना का कारण बन सकती है। इसलिए आमजन भी करंट से होने वाली दुर्घटनाओं की रोकथाम में सहयोग करें एवं बिजली लाइनों तथा ट्रांसफार्मर से उचित दूरी बना कर ही अपनी फसलों को रखें। कंपनी ने उपभोक्ताओं से अपील की है कि विद्युत लाइनों, ट्रांसफार्मरों एवं उपकरणों के साथ छेड़छाड़ न करें तथा सुरक्षित दूरी बनायें रखें। यदि आँधी तूफान में खंबे, तार टूटे हों तो इसकी सूचना तत्काल शिकायत कॉल सेंटर के टोल फ्री नं. 1912, उपाय एप एवं समीप के वितरण केन्द्र कार्यालय में दें। जमीन पर पड़े तारों को छूने या स्पर्श करने की गलती न करें। साथ ही पार करने का प्रयास न करें। पान टपरों तथा ऐसी दुकानों जिनमें लोहे की चादर का इस्तेमाल होता है, में वायरिंग को सुरक्षित ढंग से पी.वी.सी. पाईप के द्वारा ही कराई जाए। किसी प्रकार की कटी-फटी लूज वायरिंग से जान-माल का खतरा हो सकता है।

उप मुख्यमंत्री ने रीवा नगर में जल आपूर्ति व सीवरेज कार्यों की समीक्षा की

रीवा नगर "जीरो अनट्रीटेड वेस्ट" के लक्ष्य को शीघ्र प्राप्त करे इसके लिए ठोस कार्ययोजना पर करें कार्य

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)।उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि रीवा शहर तेज गति से प्रगति कर रहा है और विस्तारित हो रहा है। रीवा शहर में म्युनिसिपल वेस्ट का वैज्ञानिक तरीके से प्रबंधन किया जाना अत्यंत आवश्यक है। उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि भविष्य में रीवा शहर "जीरो अनट्रीटेड वेस्ट" के लक्ष्य को प्राप्त करे, इसके लिए ठोस कार्ययोजना बनाकर क्रियान्वयन प्रारंभ करें। उन्होंने निर्देश दिए कि जयंती कुंज में स्थापित 12 एमएलडी क्षमता के सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट (एसटीपी) का संचालन शीघ्र प्रारंभ करने की दिशा में सभी आवश्यक कदम तत्काल उठाए जाएं। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने मंत्रालय, भोपाल में रीवा नगरीय क्षेत्र में संचालित सीवरेज, पेयजल आपूर्ति और अन्य विकास कार्यों की विस्तृत समीक्षा की।

नगरीय निकाय रीवा को आवश्यक तकनीकी एवं प्रशासनिक सहयोग उपलब्ध करायें: उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने अमृत 2.0 योजना के अंतर्गत रीवा नगर निगम क्षेत्र में संचालित पेयजल आपूर्ति योजना की प्रगति की समीक्षा की। उन्होंने कहा कि कार्य को प्राथमिकता से पूर्ण किया जाए। उन्होंने निर्देश दिए कि नगरीय निकाय रीवा को आवश्यक तकनीकी एवं प्रशासनिक सहयोग तत्काल उपलब्ध कराया जाए। उन्होंने संबंधित विभागीय अधिकारियों को निर्देशित किया कि सभी कार्य निर्धारित समय-सीमा में पूर्ण हों और उनकी गुणवत्ता से कोई समझौता न किया जाए।

रीवा को स्मार्ट नगर के रूप में विकसित करने की दिशा में समन्वयित प्रयास करें: उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने रीवा क्षेत्र में पुनर्घत्वीकरण कार्यों की भी समीक्षा की तथा अधिकारियों से अद्यतन जानकारी प्राप्त कर आवश्यक मार्गदर्शन दिया। उन्होंने कहा कि रीवा नगर को आधुनिक नगरीय सुविधाओं से युक्त स्मार्ट नगर के रूप में विकसित करने की दिशा में सभी विभाग समन्वयित प्रयास करें। अपर मुख्य सचिव नगरीय विकास एवं आवास संजय कुमार शुक्ला, आयुक्त नगरीय प्रशासन सिबी चक्रवर्ती, नगर निगम रीवा के आयुक्त सौरभ सोनवड़े सहित नगरीय विकास विभाग के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

भारतीय सिंधू सभा ने पुष्पवर्षा कर शोभायात्रा का किया भव्य स्वागत वंदन अभिनंदन

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। हिंदू पर्व समन्वय समिति के तत्वाधान में श्री रामनवमी शोभा यात्रा के अवसर पर राष्ट्रीय समाजसेवी संस्था भारतीय सिंधू सभा सतना संस्थाध्यक्ष श्री अशोक चांदवानी के नेतृत्व में श्री महावीर भवन के पास कमल सलेक्शन के सामने पुष्पवर्षा से भव्य स्वागत- वंदन- अभिनंदन किया। संस्था के महामंत्री विनोद गेलानी ने बताया शोभायात्रा का भव्य स्वागत करते हुए प्रभु श्रीराम का माल्यार्पण के साथ पुष्पवर्षा करके आरती उतारी गयी।

स्वागत करने वालों में श्री सतीश सुखेजा विक्रम चौधरी गोपी गेलानी श्रीचंद मनवाणी गोपीचंद कापड़ी फेरूमल तोलवानी राजलदास आडवाणी विजय जग्यासी मनोहर आरतानी विनोद गेलानी देवेंद्र सत्यवानी इंद्रलाल कापड़ी जेठानन्द वाधवानी पहलाजराय भावनानी भरत कामदार नारायण दास गुलाबी गंगाराम सचदेव केशव मखीजा संजय आहूजा पंकज आहूजा भानु हासवानी घनश्यामदास सोनी घनश्याम दास असर गुरमुख पंजवानी महेश रावलानी संदीप तोलवानी मनोज नोतानी संजय नागदेव राजकुमार रोचलानी करतार कामरानी डॉ अशोक दुलानी महेश रावलानी मनीष सदानी संजय वाधवानी शंकर सेनानी पहलाज राय चेतवानी अशोक नागदेव राखी होतचंदानी सिमरन होतचंदानी बबीता गंगवानी मुकेश होत वानी सदस्य गण उपस्थित रहे

शोभायात्रा में आकर्षण का केंद्र रही रक्तदान की झांकी

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)।हिंदू पर्व समन्वय समिति के तत्वाधान में श्री रामनवमी महोत्सव के अवसर पर निकली शोभायात्रा में समाजसेवी संस्था सिन्धु विकास समिति संस्थाध्यक्ष विनोद गेलानी के सानिध्य में रक्तदान जागरूकता झांकी के साथ शामिल हुई

सर्वसमाज के युवाओं एवं मातृशक्ति को मानवता सेवार्थ रक्तदान के लिए प्रेरित कर रही सिन्धु विकास समिति की यह झांकी शोभायात्रा में आकर्षण का केंद्र रही। संस्था मंत्री महेश रावलानी ने जानकारी देते हुए बताया रक्तदान की मौखिक जानकारी के साथ रक्तदान विषयार्थ पंपलेट वितरण भी किया गया। झांकी सजाने में ज्ञान खटवानी, दिलीप सोनी,संजय वाधवानी, बंसी नागदेव,मनीष सदानी का उल्लेखनीय योगदान रहा। शोभायात्रा में संस्था के संरक्षक श्रीचंद मनवाणी गोपी गेलानी मनोहर डिगवानी अध्यक्ष विनोद गेलानी अशोक चांदवानी घनश्याम मंघरानी गोपीचंद कापड़ी मनोहर लाल वाधवानी जेठानंद वाधवानी संजय वाधवानी गंगाराम सचदेव दिलीप सोनी अमित घोघवानी कमल पुरस्वानी दीपक वाधवानी मनीष सदानी बंसी नागदेव मनोहर आरतानी मनमोह माहेश्वरी विभाष बनर्जी आकाश बनर्जी अनिल मोटवानी इंद्रलाल कापड़ी अशोक भामानी गुरमुख पंजवानी रूपेश वालेचा विशाल राजपाल कैलाश वाधवानी महिला मंडल से रखी होतचंदानी सिमरन होतचंदानी मोना चोपड़ा डॉक्टर मनीषा सोई आभा सिंह प्रमुख रूप से शामिल रहे।

मैहर में 15 साल के कृष्ण पर गिरा पोल, हुई मौत

कर्मचारियों को पानी पिला रहा था; घटना के बाद वही फरार हुए; परिजनों का प्रदर्शन

मीडिया ऑडीटर, मैहर (निप्र)। मध्य प्रदेश के मैहर में धनवाही कला गांव में मंगलवार को बिजली विभाग के ठेकेदार के कर्मचारियों की लापरवाही से 15 वर्षीय कृष्ण कुमार साहू की मौत हो गई। कृष्ण कुमार, जो राकेश साहू का बेटा था, कर्मचारियों को हैंडपंप से पानी लाकर पिला रहा था। इसी दौरान कर्मचारी रस्से के सहारे बिजली का खंभा खड़ा कर रहे थे। अचानक खंभा गिर गया और कृष्ण कुमार उसकी चपेट में आ गया।

घटना के बाद कर्मचारी लहूलुहान हालत में पड़े कृष्ण को छोड़कर मौके से फरार हो गए। परिजन तुरंत उसे मैहर सिविल अस्पताल ले गए। डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। **कार्रवाई और मुआवजे की मांग:** इस घटना के बाद नाराज परिजन और ग्रामीण डीई दफ्तर पहुंच गए। वहां उन्होंने ठेकेदार के खिलाफ कार्रवाई और मुआवजे की मांग को लेकर प्रदर्शन किया। साहू समाज के जिलाध्यक्ष दीपक साहू ने कहा कि यह मानवता को शर्मसार करने वाली घटना है। जानकारी के अनुसार, बिजली के खंभे लगाने का काम अशोका प्राइवेट लिमिटेड को दिया गया था।

मिलावट से मुक्ति अभियान के तहत कलेक्टर प्रतिभा पाल के निर्देश पर कार्रवाई

स्वाद फैमिली रेस्टोरेंट का लायसेंस निलंबित खाद्य व्यवसाय पर लगाई गई गईरोक

जाँच में स्वाद फ़ैमिली रेस्टोरेंट के किचन में गंदगी पाई गई

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मिलावट से मुक्ति अभियान के तहत कलेक्टर प्रतिभा पाल के निर्देश पर खाद्य सुरक्षा प्रशासन द्वारा पोर्टल पर प्राप्त शिकायत पर न्यू बस स्टैंड स्थित स्वाद फ़ैमिली रेस्टोरेंट का लायसेंस जांच के उपरांत निलंबित कर दिया गया है। उल्लेखनीय है कि शिकायतकर्ता द्वारा पोर्टल में शिकायत की गयी थी कि रेस्टोरेंट से पार्सल के माध्यम से कढ़ाई पनीर व रोटी का ऑर्डर दिया गया था। जब सप्लाई प्राप्त हुई तो पार्सल खोलने पर कढ़ाई पनीर में कॉकरोच पाया गया। शिकायत की जाँच खाद्य सुरक्षा अधिकारियों की टीम द्वारा की गई। जाँच के दौरान स्वाद फ़ैमिली रेस्टोरेंट के किचन में गंदगी पाई गई नालियां किचन में खुली हुई थी तथा किचन में ही जूठे बर्तनों को साफ़ कर उसका वेस्ट वही रखा गया था साथ ही मंजिल की खिड़की खुली हुई थी जिनमें किसी प्रकार की नेट नहीं लगी हुई थी। पेस्ट कंट्रोल सर्टिफिकेशन एवं फ़ूड हैंडलर्स के फ़िटनेस सर्टिफ़िकेट भी नहीं पाए गए। किचन में अत्यधिक गंदगी होने एवं शिकायत के संदर्भ में स्वाद फैमली रेस्टोरेंट का लाइसेंस तत्काल प्रभाव से निलंबित कर खाद्य व्यवसाय पर पूर्ण रोक लगा दी गई है।

स्वागत की योग्य संसद में वक्फ बिल पास

मीडिया ऑडीटर, मैहर (निप्र)। सुप्रसिद्ध भागवताचार्य श्री आशीषाचार्य जी महाराज वृन्दावनोपासक ने बताया कि वक्फ बोर्ड संशोधन विधेयक संसद में पारित हो गया इसके लिए माननीय प्रधानमंत्री श्री मोदी जी, गृहमंत्री जी को बहुत-बहुत साधु बाद धन्यवाद। साथ ही सभी राजनीतिक दलों को धन्यवाद जिन्होंने राष्ट्र हित को प्राथमिकता देते हुए इस बिल का समर्थन किया यह संशोधन देश के संवैधानिक व्यवस्था को और अधिक पारदर्शी और प्रभावी बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है ।अब मौखिक वक्फ घोषणाओं की समाप्ति होगी और पूर्ण पारदर्शिता हेतु वक्फ संपत्तियों का डिजिटलीकरण होगा।

अवैध कोयला परिवहन कर रहे एक ट्रैक्टर-ट्राली को जब्त किया

आरोपी ट्रेन के डिब्बों से कोयला नीचे फेंककर चुराते थे, बनारस की मंडी में बेचते

मीडिया ऑडीटर, सिंगरौली (निप्र)। सिंगरौली में कोयला चोरी के एक बड़े मामला सामने आया है। बैढन थाना पुलिस और खनिज विभाग की टीम ने संयुक्त कार्रवाई करते हुए अवैध कोयला परिवहन कर रहे एक ट्रैक्टर-ट्राली को जब्त किया है। कलेक्टर चंद्रशेखर शुक्ला को मिली शिकायत के बाद यह कार्रवाई की गई। शिकायत में बताया गया था कि नॉर्दर्न कोलफील्ड्स की निगाही कोल परियोजना के पास कुछ माफिया सक्रिय हैं। ये लोग ट्रेन के डिब्बों से कोयला नीचे फेंकवाते हैं। फिर ट्रैक्टर-ट्रालियों से इसे इकट्ठा कर ट्रकों में भरते हैं। इसके बाद इस कोयले को बनारस की मंडी में बेच देते हैं।

कार्रवाई करने टीम ग्राम भरुहा नंदगांव पहुंची: कलेक्टर के निर्देश पर सहायक खनिज अधिकारी विद्याकांत तिवारी और बैढ़न थाने की पुलिस टीम ग्राम भरुहा नंदगांव पहुंची। यहां से कोयला लदी एक ट्रैक्टर-ट्राली को जब्त कर नवानगर थाने में खड़ा करवाया गया है।

सहायक खनिज अधिकारी विद्याकांत तिवारी ने बताया कि माजन इलाके के कुछ कोयला माफिया के गुर्गे संगठित तरीके से यह काम कर रहे थे। जब भी निगाही सीएचपी के पास कोयला लदान के लिए ट्रेन आती, ये लोग कोयला चोरी कर लेते थे। अब इस मामले में अवैध खनिज परिवहन और भंडारण नियम के तहत कार्रवाई की जा रही है।

अतिरिक्त संचालक को एन एस यू आई रीवा ने सौंपा ज्ञापन

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। आज रीवा में एनएसयूआई जिलाध्यक्ष पंकज उपाध्याय के नेतृत्व अतिरिक्त संचालक महोदय को महाविद्यालयों का जो लगातार फुहर गानों में वीडियो वायरल हुआ है उसी पर कार्यवाही हेतु मांग को लेकर आज एनएसयूआई प्रतिनिधिमंडल के साथ ज्ञापन सौंपा गया है।

जारी प्रेस विज्ञप्ति में जिलाध्यक्ष पंकज उपाध्याय ने बताया कि पिछले कुछ महीनों से सोशल मीडिया में लगातार विभिन्न महाविद्यालयों में छात्र छात्राओं व प्राध्यापकों का सोशल मीडिया में अश्लील गानों पर वीडियो वायरल हुआ जिसमें फूहर गानों पर गाने लगें और डांस भी हुआ बड़ा विषय यह रहा कि इसमें प्राचार्य से लेकर सभी शिक्षक भी सम्मिलित। इस पर एनएसयूआई ने आज अतिरिक्त संचालक महोदय से मुलाकात कर महाविद्यालय। प्रबंधन के ऊपर कार्रवाई की मांग की है क्योंकि लगातार एक महीने से देखा जा रहा है। पहले टीआरएस महाविद्यालय का वीडियो वायरल हुआ जो अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के बैनर तले कार्यक्रम किया गया था उसके बाद आपके मऊगंज में एक वीडियो वायरल हुआ। उसके बाद विश्वविद्यालय का एक वीडियो वायरल हुआ और हाल। ही में कन्या महाविद्यालय का एक वीडियो वायरल हुआ जिसमें शिक्षक से लेकर प्राचार्य व छात्र छात्राएं अश्लील गाने पर डांस कर रहे हैं। जिसका एनएसयूई पुरजोर विरोध करती है। और साथ में एक छात्रा का सिगरेट पीने का वीडियो भी वायरल हुआ।वह बेहद निंदनीय है महाविद्यालय के ड्रेस में महाविद्यालय के अन्दर सिगरेट पी रहे हैं इन पर भी कार्यवाहिय होनी चाहिए होना चाहिए

एक हफ्ते के अंदर अगर कॉलेज प्रबंधनों के ऊपर कार्रवाई नहीं हुई तो एनएसयूआई उग्र प्रदर्शन भी करेगी जिसकी जिम्मेदारी पूरी शासन प्रशासन व कॉलेज प्रबंधन की होगी।।

फार्म-हाउस में बंधक बनाकर दो महिला डांसर के साथ रेप

छठी-कार्यक्रम का झांसा देकर बुलाया था; एक आरोपी छत्तीसगढ़ से गिरफ्तार, एक फरार

मीडिया ऑडीटर, सिंगरौली (निप्र)। सिंगरौली जिले में दो ऑर्केस्ट्रा डांसर के साथ बंधक बनाकर दुष्कर्म का मामला सामने आया है। आरोपियों ने दोनों डांसरों को छठी कार्यक्रम के बहाने कंचनी में बुलाया था। इसके बाद सुनसान फार्म हाउस में ले जाकर दोनों आरोपियों ने पीड़िताओं के साथ सामूहिक दुष्कर्म किया। घटना रविवार रात 11 बजे बैढ़न थाना क्षेत्र के कटनी इलाके में हुई है। पुलिस ने एक आरोपी को छत्तीसगढ़ के बलरामपुर जिले से गिरफ्तार किया गया है। जबकि एक आरोपी की तलाश में पुलिस जुटी है।

आरोपियों पर बंधक बनाकर रेप का आरोप: पीड़िता ने बताया कि रविवार दोपहर को एक अनजान नंबर से फोन आया। कॉलर ने शादी पार्टी में ऑर्केस्ट्रा परफॉर्मेंस के बारे में पूछा। छठी कार्यक्रम का झांसा देकर दोनों डांसरों को विंध्यनगर बुलाया गया। वहां से एक आरोपी बाइक पर उन्हें गांव ले गया। कार्यक्रम स्थल पर पहुंचने के बजाय आरोपी उन्हें एक सुनसान फार्म हाउस में ले गए। वहां दूसरा आरोपी पहले से मौजूद था। दोनों आरोपियों ने पीड़िताओं को बंधक बनाकर रेप किया और फरार हो गए।

विंध्य नगर थाना प्रभारी अर्चना द्विवेदी ने बताया कि बीते 6 अप्रैल को दो महिलाएं विंध्य नगर थाने पहुंची थी। जिन्होंने दो आरोपियों के खिलाफ अपने साथ रेप की शिकायत की थीं। पुलिस ने परिवादद्वय दर्ज कर लिया है। 3 टीमें बनाई गई है, जो छत्तीसगढ़ और उत्तर प्रदेश की तरफ रवाना हुई हैं। दोनों आरोपियों की गिरफ्तारी कर ली जाएगी। मोबाइल नंबर के आधार पर दोनों को ट्रेस करने का प्रयास किया जा रहा है।

सदस्यता सूची के संबंध में दावे-आपत्ति 15 अप्रैल तक

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मध्यप्रदेश पुलिस गृह निर्माण सहकारी समिति मर्यादित नवीं बटालियन विशेष सशस्त्र बल रीवा के संचालक मण्डल के सदस्यों का चुनाव किया जाना है। इस संबंध में रजिस्ट्रीकरण अधिकारी ने बताया कि संचालक मण्डल के सदस्यों के चुनाव के लिए समिति की सदस्यता सूची 7 अप्रैल को प्रकाशित कर दी गई है। सूची का प्रकाशन उप पंजीयक सहकारी समिति कार्यालय, जनपद पंचायत रीवा कार्यालय जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक कार्यालय तथा समिति के सूचना पटल पर कर दिया गया है। सूची के संबंध में दावे एवं आपत्तियाँ 15 अप्रैल तक समिति कार्यालय में लिखित में प्रस्तुत की जा सकती हैं। प्राप्त दावे-आपत्तियों का निराकरण 16 अप्रैल को दोपहर 12 बजे से समिति कार्यालय में किया जाएगा। आपत्तियों के निराकरण के बाद सदस्यता सूची का अंतिम रूप से प्रकाशन किया जाएगा।

दुर्घटना में पीड़ित परिजनों को देंगे लाभ

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)।कलेक्टर प्रतिभा पाल की अध्यक्षता में अज्ञात वाहन से सड़क दुर्घटना में घायल/मृतक के निकटतम वारिस को हिट एण्ड रन मोटर दुर्घटना में पीड़ित परिजनों को लाभ दिलाये जाने के संबंध में बैठक 9 अप्रैल को आयोजित की गई है। कलेक्ट्रेट के मोहन सभागार में अपरान्ह 4 बजे से आयोजित बैठक में संबंधितों को उपस्थिति के निर्देश दिये गये हैं।

फरार आरोपी पर ईनाम घोषित किया

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। पुलिस उप महानिरीक्षक राजेश सिंह चंदेल ने फरार आरोपी देवमुनि मांझी पिता मैकू प्रसाद उम्र 60 वर्ष निवासी जेल रोड त्योंथर की दस्तयाबी/गिरफ्तारी पर बीस हजार रूपये के ईनाम की घोषणा की है। इससे पूर्व पुलिस अधीक्षक रीवा द्वारा उक्त फरार आरोपी पर दस हजार रूपये का ईनाम घोषित किया गया था जिसे पुलिस उप महानिरीक्षक द्वारा निरस्त कर दिया गया है। पुलिस उप महानिरीक्षक द्वारा आरोपी की दस्तयाबी, गिरफ्तारी, पतासाजी करने या किसी प्रकार की सहायता करने या सूचना देने पर बीस हजार रूपये की नगद राशि पुरस्कार स्वरूप प्रदान की जायेगी।

जिला योजना समिति की बैठक 17 को

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जिला योजना समिति की बैठक 17 अप्रैल को सुबह 11 बजे से कलेक्ट्रेट के मोहन सभागार में आयोजित की गई है। बैठक की अध्यक्षता जिले के प्रभारी मंत्री तथा पंचायत एवं ग्रामीण विकास और श्रम मंत्री प्रहलाद पटेल करेंगे। बैठक में प्रधानमंत्री आवास योजना, प्रधानमंत्री जनमन सड़क योजना, पेयजल, जल गंगा संवर्धन अभियान सहित अन्य विषयों पर चर्चा की जाएगी। कलेक्टर प्रतिभा पाल ने समिति के सभी सदस्यों से बैठक में उपस्थित रहने का अनुरोध किया है। कलेक्टर ने सभी संबंधित अधिकारियों को विभागीय योजनाओं की अद्यतन जानकारी के साथ बैठक में उपस्थित रहने के निर्देश दिए हैं।

विश्व स्वास्थ्य दिवस पर हुई संगोष्ठी

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जन शिक्षण संस्थान द्वारा गत दिवस प्रशिक्षण केन्द्र कुठुलिया में विश्व स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम की मुख्य अतिथि वन्दना तिवारी ने कहा कि मनुष्य अपना तथा समाज का विकास तभी कर सकते है, जब वह शारीरिक रूप से स्वस्थ हों।

विचार

भारत का महा आर्थिक संकट, शेयर बाजार और बैंकों में हाहाकार

भारत में आर्थिक मंदी जिस तरह से सामने आ रही है। जिसमें अर्थतंत्र के सारे संस्थान डगमगाते हुए नजर आ रहे हैं। शेयर बाजार में पिछले 6 महीने से लगातार गिरावट देखने को मिल रही है। इस गिरावट को थामने के लिए सरकार और रिजर्व बैंक ने लाखों करोड़ रुपया शेयर बाजार में डाला। वह रुपया भी मुनाफा वसूली में शेयर बाजार से बाहर निकल गया। रिजर्व बैंक से केंद्र सरकार ने पिछले वर्षों में डिविडेंड के नाम पर काफी बड़ी राशि वसूल कर की है। जिसके कारण रिजर्व बैंक का आर्थिक संकट भी सामने दिख रहा है। रही सही कसर सरकारी बैंक पूरी कर रहे हैं। बैंकों द्वारा जो फाइनेंस किया गया है। उसकी वसूली नहीं हो पा रही है। बैंकों द्वारा पिछले वर्षों में खातेदारों से तरह-तरह के शुल्क लगाकर अनाप-शनाप वसूली की जा रही है। एनपीए खाते की रकम का समयोजन कर बैंकों का मुनाफा बैलेंस शीट में लाभ से एडजस्ट किया जा रहा है। पिछले वर्षों में शेयर बाजार में बैंकों द्वारा भारी निवेश किया गया है । जब तक शेयर बाजार मैं तेजी बनी हुई थी। तब तक बैंकों की बैलेंस शीट मुनाफा उगल रही थी। अब बैंकों की बैलेंस शीट घाटे की ओर आगे बढ़ रही हैं। जीवन बीमा निगम जैसी कंपनियां लड़खड़ा रही हैं । म्युचुअल फंड और अन्य वित्तीय संस्थान भी शेयर बाजार की गिरावट के कारण आर्थिक हालत खराब होती चली जा रही है । भारत के करोडों परिवार कर्ज के जाल में फंसे हुए हैं ब्लूमबर्ग की जो रिपोर्ट सामने आई है । उसके अनुसार 68 फीसदी कर्जदारों को ईएमआई चुकाने में आर्थिक संकट का सामना करना पड़ रहा है। 45 अरब डॉलर का कर्ज फंसा हुआ है। 91 से 180 दिनों के भीतर लोन की किस्त जमा नहीं होने पर बैंक यह राशि एनपीए में डाल देते हैं। एनपीए 3.3 फ़ीसदी की रफ्तार से बढ़ता चला जा रहा है। 2023 में यह आंकड़ा मात्र 0.8 फीसदी था। भारत में लोन चुकाने के लिए अब लोग लोन ले रहे हैं। आर्थिक संकट के कारण लोगों को अपने बच्चों को स्कूलों से बाहर निकालना पड़ रहा है। बैंकों मे लोन डिफाल्टरों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। रिजर्व बैंक के माध्यम से माइक्रो फाइनेंस के तहत बड़ी मात्रा में पर्सनल ऋण दिया गया है। इस ऋण की भी वसूली नहीं हो पा रही है। 10 में से 9 लोगों के पास औपचारिक और स्थाई नौकरी नहीं है। जिसके कारण वह लोन की किस्त नहीं चुका पा रहे हैं । समूह लोन जो दिया गया था, वह भी वसूल नहीं हो पा रहा है। माइक्रो फाइनेंस के लोन की किस्तें भी लोग नहीं चुका पा रहे हैं। लोगों के पास पर्याप्त आय नहीं है,उनकी मासिक खर्च लायक आमदनी नहीं हैं।

टैरिफ युद्ध का भारतीय अर्थव्यवस्था पर नहीं होगा अधिक प्रभाव

दिनांक 2 अप्रेल 2025 को अमेरिकी राष्ट्रपति श्री डॉनल्ड ट्रप द्वारा, विभिन्न देशों से अमेरिका में होने वाले आयातित उत्पादों पर की गई टैरिफ सबंधी घोषणा के साथ ही अंततः अमेरिका द्वारा पूरे विश्व में टैरिफ के माध्यम से व्यापार युद्ध छेड़ दिया गया है। अभी, अमेरिका ने विभिन्न देशों से अमेरिका में होने वाले आयात पर विभिन्न दरों पर टैरिफ लगाया है। अब इनमें से कई देश अमेरिका से आयातित वस्तुओं पर टैरिफ लगाने की घोषणा कर रहे हैं, जैसे चीन ने अमेरिका से चीन में आयात होने वाले उत्पादों पर दिनांक 10 अप्रैल 2025 से 34 प्रतिशत की दर से टैरिफ लगाने की घोषणा की है। टैरिफ के माध्यम से छेड़े गए व्यापार युद्ध का भारत पर कोई बहुत अधिक विपरीत प्रभाव पड़ने की सभावना कम ही है। दरअसल, अमेरिका ने विभिन्न देशों से आयातित उत्पादों पर अलग अलग दर से टैरिफ लगाने की घोषणा की है और साथ ही कुछ उत्पादों के आयात पर फिलहाल टैरिफ की नई दरें लागू नहीं की गई हैं। टैरिफ की यह दरें 9 अप्रैल 2025 से लागू होंगी।

विभिन्न देशों से अमेरिका में आयात होने वाले उत्पादों पर 10 प्रतिशत की दर से न्यूनतम टैरिफ लगाया गया है। साथ ही, कुछ अन्य देशों यथा चीन से आयातित उत्पादों पर 34 प्रतिशत टैरिफ लगाने की घोषणा अमेरिकी राष्ट्रपति ने की है। इसी प्रकार, वियतनाम से आयातित उत्पादों पर 46 प्रतिशत, ताईवान पर 32 प्रतिशत, थाईलैंड पर 36 प्रतिशत, भारत पर 26 प्रतिशत, दक्षिण कोरिया पर 25 प्रतिशत, इंडोनेशिया पर 32 प्रतिशत, स्विट्जरलैंड पर 31 प्रतिशत, मलेशिया पर 24 प्रतिशत, कम्बोडिया पर 49 प्रतिशत, दक्षिणी अफ्रीका पर 30 प्रतिशत, बांग्लादेश पर 37 प्रतिशत, पाकिस्तान पर 29 प्रतिशत, श्रीलंका पर 44 प्रतिशत और इसी प्रकार अन्य देशों से आयातित वस्तुओं पर भी अलग अलग दरों से टैरिफ लगाने की घोषणा अमेरिकी राष्ट्रपति ने की है। कुछ उत्पादों जैसे, स्टील, एल्यूमिनियम, ऑटो, ताम्बा, फार्मा उत्पाद, सेमीकंडक्टर, एनर्जी, बुलीयन एवं अन्य महत्वपूर्ण मिनरल्स को अमेरिका में आयात पर टैरिफ के दायरे से बाहर रखा गया है। अमेरिका का मानना है कि वैश्विक स्तर पर अन्य देश अमेरिका में उत्पादित वस्तुओं के आयात पर भारी मात्रा में टैरिफ लगाते हैं, जबकि अमेरिका में इन देशों से आयात किए जाने वाले उत्पादों पर अमेरिका द्वारा बहुत कम दर पर टैरिफ लगाया जाता है अथवा बिलकुल नहीं लगाया जाता है। जिससे, अमेरिका से इन देशों को निर्यात कम हो रहे हैं एवं इन देशों से अमेरिका में आयात लगातार बढ़ते जा रहे हैं। इस प्रकार, अमेरिका का व्यापार घाटा असहनीय स्तर पर पहुंच गया है। इसके साथ साथ, अमेरिका में विनिर्माण इकाईयां बंद होकर अन्य देशों में स्थापित हो गई हैं और इससे अमेरिका में रोजगार के नए अवसर भी निर्मित नहीं हो पा रहे हैं।

अब ट्रम्प प्रशासन ने अमेरिका को पुनः विनिर्माण इकाईयों का हब बनाने के उद्देश्य से अमेरिका को पुनः महान बनाने का आह्वान किया है और इसी संदर्भ में विभिन्न देशों से आयातित उत्पादों पर भारी मात्रा में टैरिफ लगाने का निर्णय लिया गया है ताकि अमेरिका में आयातित उत्पाद महंगे हों और अमेरिकी नागरिक अमेरिका में ही निर्मित वस्तुओं का उपयोग करने की ओर प्रेरित हों। वर्तमान में बढ़े हुए टैरिफ का बोझ अमेरिकी नागरिकों को उठाना पड़ेगा और उन्हें अमेरिका में महंगे उत्पाद खरीदने होंगे, क्योंकि नई विनिर्माण इकाईयों की स्थापना में तो वक्त लग सकता है, विभिन्न वस्तुओं का उत्पादन तुरंत तो बढ़ाया नहीं जा सकता अतः जब तक नई विनिर्माण इकाईयों की अमेरिका में स्थापना हो एवं इन विनिर्माण इकाईयों में उत्पादन शुरू हो तब तक अमेरिकी नागरिकों को महंगे उत्पाद खरीदने हेतु बाध्य होना पड़ेगा। इससे अमेरिका में एक बार पुनः मुद्रा स्फीति की समस्या उत्पन्न हो सकती है एवं ब्याज दरों के कम होने के चक्र में भी देरी होगी, बहुत सम्भव है कि मुद्रा स्फीति को कम करने की दृष्टि से एक बार पुनः कहीं ब्याज दरों के बढ़ने का चक्र प्रारम्भ न हो जाए। लम्बे समय में जब अमेरिका में विनिर्माण इकाईयों की स्थापना हो जाएगी एवं इन इकाईयों में उत्पादन प्रारम्भ हो जाएगा तब जाकर कहीं मुद्रा स्फीति पर अंकुश लगाया जा सकेगा। विभिन्न देशों से आयातित उत्पादों पर टैरिफ सम्बंधी घोषणा के साथ ही, डॉलर पर दबाव पड़ना शुरू भी हो चुका है एवं अमेरिकी डॉलर इंडेक्स घटकर 102 के स्तर पर नीचे आ गया है जो कुछ समय पूर्व तक लगभग 106 के स्तर पर आ गया था। इसी प्रकार अमेरिका में सरकारी प्रतिभूतियों की 10 वर्ष की बांड यील्ड पर भी दबाव दिखाई दे रही है और यह घटकर 4.08 के स्तर पर नीचे आ गई है, यह कुछ समय पूर्व तक 4.70 के स्तर से भी ऊपर निकल गई थी। अमेरिकी डॉलर के मुकाबले भारतीय रुपए की कीमत अंतरराष्ट्रीय बाजार में बढ़नी प्रारम्भ हो गई है एवं यह पिछले चार माह के उच्चतम स्तर, लगभग 85 रुपए प्रति अमेरिकी डॉलर, पर आ गई है। ट्रम्प प्रशासन के टैरिफ सम्बंधी लिए गए निर्णयों का अमेरिकी अर्थव्यवस्था पर सकारात्मक असर लम्बी अवधि में तो हो सकता है परंतु छोटी अवधि में तो निश्चित ही यह अमेरिकी अर्थव्यवस्था को विपरीत रूप से प्रभावित करते हुए दिखाई दे रहा है। अमेरिकी पूंजी बाजार (शेयर बाजार) केवल दो दिनों में ही लगभग 10 प्रतिशत तक नीचे गिर गया है और अमेरिकी निवेशकों को लगभग 5 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर का नुक्सान हुआ है। इतनी भारी गिरावट तो वर्ष 2020 में कोविड महामारी के दौरान ही देखने को मिली थी। यदि यही स्थिति बनी रही तो अमेरिकी अर्थव्यवस्था कहीं मंदी की चपेट में न आ जाय। यदि ऐसा होता है तो पूरे विश्व की अर्थव्यवस्था भी विपरीत रूप से प्रभावित हुए बिना नहीं रहेगी। अतः ट्रम्प प्रशासन का टैरिफ सम्बंधी उक्त निर्णय अति जोखिम भरा ही कहा जाएगा।

जब पूरे विश्व की अर्थव्यवस्था विपरीत रूप से प्रभावित हुए बिना नहीं रहेगी तो भारत की अर्थव्यवस्था पर भी कुछ तो विपरीत असर होगा ही। इस संदर्भ में किए गए विश्लेषण से यह तथ्य उभरकर सामने आ रहा है कि बहुत सम्भव है कि ट्रम्प प्रशासन द्वारा भारत से आयातित वस्तुओं पर लगाए गए 26 प्रतिशत के टैरिफ का भारतीय अर्थव्यवस्था पर बहुत अधिक विपरीत प्रभाव नहीं हो। क्योंकि, एक तो भारत से अमेरिका को निर्यात बहुत अधिक नहीं है। यह भारतीय सकल घरेलू उत्पाद का मात्र लगभग 3-4 प्रतिशत ही है। वैसे भी भारतीय अर्थव्यवस्था निर्यात पर निर्भर नहीं है एवं यह विभिन्न उत्पादों की आंतिरक मांग पर अधिक निर्भर है। भारत से सकल घरेलू उत्पाद का केवल लगभग 16 प्रतिशत (वस्तुएं एवं सेवा क्षेत्र मिलाकर) ही निर्यात किया जाता है। दूसरे, भारत से अमेरिका को निर्यात किए जाने कुछ उत्पादों को उक्त टैरिफ व्यवस्था से फिलहाल मुक्त रखा गया है, जैसे फार्मा उत्पाद, सेमीकंडक्टर, स्टील, अल्यूमिनियम, ऑटो, ताम्बा, बुलीयन, एनर्जी आदि। संभवतः इन उत्पादों के भारत से अमेरिका को होने वाले निर्यात पर कुछ भी असर नहीं होने जा रहा है। तीसरे, भारतीय कम्पनियों (26 प्रतिशत टैरिफ) को रेडीमेड गर्मेंट्स के अमेरिका को निर्यात में पड़ौसी देशों, यथा, बांग्लादेश (37 प्रतिशत टैरिफ), पाकिस्तान (29 प्रतिशत टैरिफ), श्रीलंका (44 प्रतिशत टैरिफ), वियतनाम (46 प्रतिशत टैरिफ), चीन (34 प्रतिशत टैरिफ), इंडोनेशिया (32 प्रतिशत टैरिफ), आदि के साथ अत्यधिक स्पर्धा का सामना करना पड़ता है। परंतु, उक्त समस्त देशों से अमेरिका को होने वाले रेडीमेड गार्मेंट्स के निर्यात पर भारत की तुलना में अधिक टैरिफ लगाए जाने की घोषणा की गई है। अतः इन देशों से रेडीमेड गार्मेंट्स के अमेरिका को निर्यात भारत की तुलना में महंगे हो जाएंगे, इससे रेडीमेड गार्मेंट्स के क्षेत्र में भारत के लिए लाभ की स्थिति निर्मित होती हुई दिखाई दे रही है। इसी प्रकार, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं कृषि उत्पादों के निर्यात भी भारत से अमेरिका को बढ़ सकते हैं। यदि किन्ही क्षेत्रों में भारत को नुक्सान होता हुआ दिखाई भी देता है तो भारत के विश्व के अन्य देशों के साथ बहुत अच्छे राजनैतिक संबंधो के चलते भारत को अपने उत्पादों के लिए नए बाजार तलाशने में किसी प्रकार की परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा। वैसे भी, अमेरिका सहित भारत के यूरोपीयन देशों, ब्रिटेन एवं खाड़ी के देशों के साथ द्विपक्षीय व्यापार समझौतों को सम्पन्न करने हेतु वार्ताएं लगभग अंतिम दौर में पहुंच गईं हैं, इसका लाभ भी भारत को होने जा रहा है। भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा शीघ्र ही मोनेटरी पॉलिसी के माध्यम से रेपो दरों में परिवर्तन की घोषणा की जाने वाली है। भारत में चूंकि मुद्रा स्फीति की दर लगातार गिरती हुई दिखाई दे रही है अतः भारत में रेपो दर में 75 से 100 आधार बिंदुओं की कमी की घोषणा की जा सकती है। यदि ऐसा होता है तो विभिन्न उत्पादों की उत्पादन लागत में कुछ कमी सम्भव होगी, जिसके चलते भारत में निर्मित उत्पाद अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अधिक प्रतिस्पर्धी बन सकते हैं। हालांकि, केवल ब्याज दरों के कमी करके पूंजी की लागत को कम करने से काम चलने वाला नहीं है, भारत को भूमि एवं श्रम की लागतों को भी कम करने की आवश्यकता है तथा उत्पादकता में सुधार करने की भी आवश्यकता है ताकि भारत में निर्मित होने वाले उत्पादों की कुल लागत में कमी हो एवं यह उत्पाद अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा में अन्य देशों के मुक़ाबले में टिक सकें।

आरएसएस मुख्यालय में मोदी- क्या यह संघम शरणं गच्छामि है?

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी हाल में नागपुर-स्थित आरएसएस मुख्यालय पहुंचे। वहां उन्होंने आरएसएस के संस्थापक डॉ के.बी। हेडगेवार और द्वितीय सरसंघचालक माधव सदाशिव गोलवलकर को श्रद्धांजलि दी। इस यात्रा का खूब प्रचार हुआ और इसकी सर्वत्र चर्चा हो रही है। कुछ लोगों का कयास है कि चूँकि अगले सितम्बर में मोदी 75 साल के हो जाएंगे और अपनी पार्टी के नियमों के अनुसार उन्हें सक्रिय राजनीति से सन्यास लेना होगा, इसलिए यह उनकी फेयरवेल यात्रा थी! इस बीच कई घटनाओं से ऐसा लग रहा है कि पिता (आरएसएस) और बेटे (भाजपा) के रिश्तों में कुछ खटास आ गयी है। सन 2024 के आमचुनाव से पहले भाजपा अध्यक्ष जे.पी। नड्डा ने कहा था कि भाजपा अब अपने पैरों पर खड़ी हो गयी है और उसे आरएसएस के समर्थन की ज़रुरत नहीं है। उन्होंने यह भी कहा कि इसके पहले तक भाजपा इतनी मज़बूत नहीं थी इसलिए उसे वोट हासिल करने के लिए आरएसएस की मदद की दरकार रहती थी।एक दूसरा मसला है मोदी का आसमान छूता अहंकार। उन्होंने कहा कि वे नॉन-बायोलॉजिकल हैं और ईश्वर ने उन्हें इस धरती पर अपना दूत बनाकर भेजा है। संघ के मुखिया मोहन भागवत को लगा कि मोदी का अहं बहुत ज्यादा बढ़ गया है। उन्होंने सार्वजनिक रूप से टिप्पणी की कि कुछ लोग खुद को देवता और फिर भगवान मानने लगते हैं।

लोकसभा चुनाव में भाजपा की सीटों में कमी आई। ऐसा माना जाने लगा कि आरएसएस ने चुनाव में पूरा जोर नहीं लगाया और इसलिए भाजपा को नुकसान हुआ। मगर फिर महाराष्ट्र और हरियाणा विधानसभा चुनावों में आरएसएस, भाजपा के समर्थन में कूद पड़ा। जहाँ तक आरएसएस का प्रश्न है, सिवाय 1984 के चुनाव के, जब संघ को लगने लगा था कि खालिस्तान आन्दोलन भारत की एकता के लिए खतरा है, उसने भाजपा का साथ दिया है और उसे वोट दिलवाने में मदद की है।

आरएसएस, संघ परिवार का मुखिया और मुख्य योजनाकार है। उसकी राष्ट्रीय प्रतिनिधि सभा यह सुनिश्चित करती है कि संघ के अनुषांगिक संगठन अपना-अपना काम करते हुए भी आरएसएस की विचारधारा का प्रचार करें - अतीत (मनुस्मृति) का महिमामंडन करें, मुसलमानों और ईसाईयों के खिलाफ नफरत फैलाएं और लोगों को बताएं कि ईसाई धर्म और इस्लाम विदेशी हैं। चुनावों के दौरान संघ और उससे जुड़े संगठन भाजपा की जीत के लिए पूरा जोर लगाते हैं। भारतीय जनसंघ की स्थापना हिन्दू महासभा के श्यामाप्रसाद मुख़र्जी ने की थी। मुख़र्जी के देहांत के बाद संघ ने धीरे-धीरे जनसंघ पर कब्ज़ा जमा लिया। इससे आरएसएस को अपने अधीन काम करने वाला एक विशुद्ध राजनैतिक संगठन हासिल हो गया। आरएसएस, भाजपा और संघ के अन्य बाल-बच्चों के बीच एकदम

स्पष्ट श्रम विभाजन है।

इसका सबसे बढ़िया उदाहरण था 1980 के दशक में विश्व हिन्दू परिषद् द्वारा शुरू किया गया राममंदिर आन्दोलन। भाजपा ने इस आन्दोलन को अपने हाथों में ले लिया और उसके ज़रिये जमकर वोट कबाड़े। आरएसएस लगातार प्राचीन भारत का महिमामंडन करता है और धार्मिक अल्पसंख्यकों सहित समाज के कमज़ोर वर्गों जैसे दलितों, आदिवासियों और महिलाओं के बारे में गलत धारणाएं फैलाता है। उसकी सबसे बड़ी ताकत है उसकी शाखाओं का विशाल जाल और लोगों से जुड़ने की उसकी कई कार्यविधियाँ।

यद्यपि भारत का सामंती और औपनिवेशिक समाज अब प्रजातान्त्रिक बन चुका है मगर आरएसएस अब भी अपनी शाखाओं के ज़रिये राजे-रजवाड़ों के दौर में व्याप्त जातिगत और लैंगिक ऊंचनीच और सामंती मूल्यों को बढ़ावा देता है। उससे जुड़े एकल विद्यालय, वनवासी कल्याण आश्रम, सेवा भारती, राष्ट्रसेविका समिति आदि भी यही काम करते हैं।

समाज के विभिन्न तबकों और राजनैतिक ढांचे में घुसपैठ करने का काम आरएसएस बहुत लम्बे समय से कर रहा है। मगर पहले राज्यों और अब केंद्र में भाजपा के सत्ता में आने से इस प्रक्रिया में जबरदस्त तेजी आई है। अब संघ अपनी विचारधारा को और फैलाने के लिए महिलाओं, बच्चों और बुजुर्गों के समूह गठित कर रहा है। मैं मुंबई के जिस इलाके में रहता हूँ, वहां संघ ने हाल में एक पिकनिक का आयोजन किया। एक मुस्लिम महिला उसमें भाग लेना चाहती थी मगर उसे सीधे-सीधे कह दिया गया कि पिकनिक के दौरान जो बातें की जाएंगी उससे वो असहज महसूस करेगी। सुबह-सुबह हाथों में लाठियां लिए जाती महिलाओं को देखकर आप यह समझ सकते हैं कि वे राष्ट्र सेविका समिति की शाखा में जा रहीं हैं।

पिछले एक दशक के भाजपा शासन में आरएसएस के अपने हिन्दू राष्ट्रवादी एजेंडा के कई लक्ष्य हासिल कर लिए हैं। राममंदिर बन चुका है, अनुच्छेद 370 हटाया जा चुका है, मुंहजबानी तलाक गैरकानूनी घोषित किया जा चुका है और राष्ट्रीय नागरिकता पंजी (एनआरसी) तैयार करने की प्रक्रिया शुरू हो गयी है। वक्फ के मामले में संसद में बहस चल रही है।

यह साफ़ है कि आरएसएस और भाजपा के बीच कोई विवाद या असहमति नहीं है। ज्यादा से ज्यादा यह हो सकता है कि दोनों के बीच हिन्दू राष्ट्र की स्थापना के लिए अपनाई जाने वाली रणनीति के मामले में कुछ मतभेद हों।

मोदी ने हेडगेवार और गोलवलकर के तारीफ करते हुए कहा कि उन्होंने देश को सही राह दिखाई। वह राह क्या है? पहली तो यह कि आज़ादी, बराबरी और भाईचारे के मूल्यों को सबसे ज्यादा अहमियत देने वाले भारतीय राष्ट्रवादी आन्दोलन से सुरक्षित दूरी बनाई रखी जाए। दूसरे बिना स्वीकार करे गोलवलकर के इस सिद्धांत का पालन किया जाए कि मुसलमान, ईसाई और कम्युनिस्ट हिन्दू राष्ट्र के दुश्मन हैं। इस साल (2025) की ईद-उल-फ़ित्र इसका उदाहरण हैं। एक राज्य में उसे सार्वजनिक की बजाय ऐच्छिक छुट्टी घोषित कर दिया गया। सड़क पर नमाज़ अदा करने का विरोध किया जा रहा है

जिला अस्पताल में मरीज के परिजनों का हंगामा

मीडिया ऑडीटर, छतरपुर (निप्र)। छतरपुर जिला अस्पताल में मंगलवार दोपहर मरीज और उसके परिजनों ने जमकर उपद्रव मचाया। राजनगर के दीपक कुशवाहा और उसके परिवार के सदस्यों ने चिकित्सकों के साथ झूमाझटकी की और ओटी में तोड़फोड़ की। घटना के बाद नाराज चिकित्सक हड़ताल पर चले गए। सीएमएचओ डॉ. आरपी गुप्ता के पहुंचने पर इमरजेंसी सेवाएं शुरू हुईं।

मरीज और उसके परिजनों ने स्टाफ कर्मचारी अजय बाल्मीक, सौरभ खरे, आशीष द्विवेदी, धीरज प्रजापति और नितेंद्र सिंह परमार के साथ भी मारपीट की।

डॉक्टरों का आरोप- मरीज के परिजनों ने की मारपीट और तोड़फ़ोड़

अस्पताल प्रबंधन ने बताया कि रोड एक्सीडेंट में घायल दीपक अपने परिवार के 4 पुरुष और 7 महिला सदस्यों के साथ सोमवार रात अस्पताल आया था। मंगलवार सुबह 8 बजे से ही वे स्टाफ से विवाद कर रहे थे। सर्जन डॉक्टर बद्री पटेल ने उनकी समस्या सुनने का प्रयास किया। लेकिन दीपक ने ओटी में अजीब व्यवहार करना शुरू कर दिया। उसके परिवार की महिलाओं ने तोड़फोड़ और मारपीट शुरू कर दी।

सुरक्षा व्यवस्था बढ़ाने की मांग: डॉ. बद्री पटेल ने पुलिस को सूचना दी। सिटी कोतवाली थाना प्रभारी अरविंद दांगी और एसडीएम अखिल राठौर ने अस्पताल पहुंचकर स्थिति संभाली। डॉ. पटेल ने अस्पताल में सुरक्षा व्यवस्था बढ़ाने की मांग की।

जांच में सामने आया कि मुख्य आरोपी दीपक कुशवाहा मानसिक रूप से बीमार हो सकता है। वह खुद को कल्कि अवतार बताता है। सीएमएचओ डॉ. गुप्ता ने बताया कि पुलिस के साथ मिलकर मामले की जांच की जा रही है। दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

बैठक में जलवायु अनुकूलन गांव बनाने की योजना

ऑडीटर ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

कोरिया जिले में जिला खनिज संस्थान न्यास की शासी परिषद की बैठक हुई। बैठक में कलेक्टर त्रिपाठी ने विजन 2047 की जानकारी दी। इसके तहत कोरिया जिले को जलवायु अनुकूलन गांव के रूप में विकसित किया जाएगा। जल प्रबंधन, हरित कृषि, सौर ऊर्जा और वन संरक्षण पर काम होगा। हसदेव नदी, गोपद नदी, तंजारा जलप्रपात और गुरु घासी दास टाइगर रिजर्व के पर्यटन विकास की योजना बनाई गई है। बैठक में शासी परिषद ने विकास प्रस्तावों को मंजूरी दी। जिला पंचायत के सीईओ डॉ. आशुतोष चतुर्वेदी ने वित्तीय आंकड़े प्रस्तुत किए। उन्होंने बताया कि 2016-17 से 2024-25 तक 37,895.68 लाख रुपए प्राप्त हुए हैं। इसमें से 37,941.53 लाख रुपए खर्च किए गए हैं। 1,169 कार्य निरस्त किए गए, जिनकी राशि 1,898.30 लाख रुपए है। विधायक राजवाड़े ने प्रधानमंत्री आवास योजना, पेयजल, बिजली और आंगनवाड़ी केन्द्रों के लिए महत्वपूर्ण सुझाव दिए। बैठक में भौतिक अधोसंरचना, सड़क निर्माण, स्वास्थ्य और शिक्षा के विकास पर चर्चा हुई। कलेक्टर चन्दन त्रिपाठी की अध्यक्षता में हुई बैठक में विधायक भईया लाल राजवाड़े, जिला पंचायत अध्यक्ष मोहित पैकरा और अन्य जनप्रतिनिधि उपस्थित थे। वहीं, अपर कलेक्टर डी.डी. मण्डावी ने आभार व्यक्त किया। बैठक में विभिन्न विभागों के जिला अधिकारी मौजूद रहे।

दिनदहाड़े युवक की चाकू गोदकर हत्या

अस्पताल पहुंचने से पहले तोड़ा दम, आरोपी फरार

ऑडीटर ऑडीटर
Mediaauditor.in

रायपुर रायपुर में दिनदहाड़े युवक की चाकू मारकर हत्या कर दी गई है। रायपुर के आजाद चौक थाना क्षेत्र के अग्रसेन चौक के पास हांडीपारा में गोपी निषाद को मारा चाकू मारा गया। जिस समय युवक पर हमला किया गया उस वक्त आस-पास खड़े लोग सहम गए। आरोपी मौके से फरार हो गया। घायल युवक को गंभीर हालत ने रायपुर के मेकाहारा अस्पताल इलाज के लिए ले जाया गया । ज्यादा खून बहने और चाकू से गहरे घाव के कारण अस्पताल पहुंचने से पहले ही युवक की मौत हो गई । वहीं आजाद चौक थाना पुलिस इस मामले में फरार आरोपी की तलाश में जुट गई है। मृतक का शव पोस्टमॉर्टम के लिए भेजा गया है।

इस मामले पर पुलिस शुभम नाम के युवक की तलाश कर रही है। जानकारी के मुताबिक शुभम साहू नाम के युवक ने गोपी पर चाकू से हमला किया है। हत्या का कारण अज्ञात है और पुलिस इस मामले में फरार आरोपी की तलाश में जुटी है।

समाधान पेटी-सुशासन वाहन की शुरुआत

कलेक्टरेट परिसर में सुशासन तिहार का आगाज

ऑडीटर ऑडीटर
Mediaauditor.in

मनेंद्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर जिले के कलेक्टरेट परिसर में सुशासन तिहार 2025 का आगाज हो गया है। जिला पंचायत अध्यक्ष मोहित पैंकरा और कलेक्टर चन्दन त्रिपाठी की मौजूदगी में समाधान पेटी और सुशासन वाहन को हरी झंडी दिखाई गई। सुशासन वाहन जिले के दूरदराज के इलाकों में जाएगा। यह वाहन लोगों की समस्याएं, सुझाव और शिकायतें दर्ज करेगा। समाधान पेटी कलेक्टरेट परिसर, जनपद पंचायत, ग्राम पंचायत और नगरीय निकाय क्षेत्रों में रखी गई है। सुशासन तिहार तीन चरणों में पूरा होगा। पहला चरण 8 से 11 अप्रैल 2025 तक चलेगा। इस दौरान नगरीय निकाय स्तर पर वार्डों में और जनपद पंचायत स्तर पर ग्राम पंचायत हाट बाजार में आवेदन लिए जाएंगे। दूसरे चरण में एक महीने के अंदर आवेदनों का निपटारा किया जाएगा। तीसरे चरण में 5 से 31 मई 2025 तक समाधान शिविर लगेंगे। कलेक्टर चन्दन त्रिपाठी ने कहा कि इस पहल का मकसद सरकारी योजनाओं को प्रभावी तरीके से लागू करना है। साथ ही जिले के लोगों को योजनाओं का जल्द से जल्द लाभ मिल सके। उन्होंने लोगों से समाधान शिविरों और समाधान पेटियों का लाभ उठाने की अपील की है। जिले के सोनहत जनपद पंचायत का हेल्पलाइन नम्बर 9691453929, 9770318723 है। जबकि बैकुण्ठपुर जनपद पंचायत का हेल्पलाइन नम्बर 7089610076 और 9340799216 है।

कॉन्स्टेबल को पीटा, फटा सिर

बदमाशों ने टक्कर मार शराब के लिए मांग पैसे , नहीं देने पर की मारपीट...

ऑडीटर ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

बिलासपुर छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में कुछ बदमाशों ने एक कॉन्स्टेबल पर बीच सड़क लाठी और रॉड से हमला कर दिया। इस घटना का वीडियो भी सामने आया है जो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। घटना में आरक्षक सतीश कुमार लोधी का सिर फट गया, वह खून से लथपथ अस्पताल पहुंचा। मामला सिटी कोतवाली थाना क्षेत्र का है। 4 बदमाश स्कूटी में सवार होकर आए और सतीश को टक्कर मारी। जिसके बाद वे शराब पीने के लिए पैसे की मांग करने लगे। जब उसने पैसे देने से मना किया तो उसे दौड़ा-दौड़ाकर मारा। तब सतीश अपनी जान बचाकर भागा। वारदात के बाद पुलिस ने 2 बदमाशों को पकड़ लिया है। जबकि, उसके दो साथी फरार हैं। सतीश कुमार लोधी पुलिस विभाग में आरक्षक के पद पर कार्यरत है। उसकी पोस्टिंग जिला न्यायालय में है। सोमवार को आरक्षक सतीश कुमार लोधी अपने दोस्त आनंद वर्मा के साथ शाम 4 बजे घर जा रहा था। तभी सदर बाजार स्थित करोना चौक के पास यह घटना हुई।

दो युवक बाइक से उतरकर आरक्षक और उसके दोस्त से शराब पीने के लिए पैसे मांगने लगे। आरक्षक ने विरोध करते हुए पैसे देने से मना किया, तब युवकों ने गाली देते हुए रॉड और लाठी से आरक्षक और उसके साथी पर पर ताबड़तोड़ हमला कर दिया।

पहुंचकर थाने दर्ज कराई शिकायत....

हमले में खून से लथपथ घायल आरक्षक और उसका दोस्त भाग कर सिटी कोतवाली थाना पहुंचे, जहां उसने पुलिसकर्मियों को घटना की जानकारी दी। खबर मिलते ही पुलिस की टीम मौके पर पहुंच गई। इस दौरान उन्होंने सैफुल और मनोज वर्मा को पकड़ लिया। वहीं, सैफुल के भाई समेत दो अन्य आरोपी फरार हैं। पुलिस उनकी तलाश कर रही है।

पुलिस ने निकाला जुलूस

इस घटना के बाद सैफुल हक और मनोज वर्मा को पुलिस ने पकड़ा है। फैजुल हक और एक अन्य अभी भी फरार है। पूछताछ के बाद पुलिस ने दोनों आरोपियों को सिटी कोतवाली थाने से जिला न्यायालय तक पैदल मार्च कराया।

आदतन बदमाश है...

पुलिस के मुताबिक, करोना चौक निवासी आरोपी फैजुल हक और उसका भाई सैफुल हक दोनों आदतन बदमाश हैं। होली के पहले ही दोनों हथियार के साथ पकड़े गए थे। पुलिस ने उनके खिलाफ आर्म्स एक्ट की कार्रवाई कर उन्हें जेल भेजा था। बाद में दोनों जेल से छूट गए थे, जिसके बाद उन्होंने फिर से गुंडागर्दी शुरू कर दी।

मनेंद्रगढ़ में एक महिला ने सातवीं बार किया रक्तदान, कुल 11 लोगों का योगदान रहा

ऑडीटर ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

मनेंद्रगढ़ में विश्व स्वास्थ्य दिवस पर भारतीय रेड क्रॉस सोसाइटी ने सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में रक्तदान शिविर का आयोजन किया। कलेक्टर डी. राहुल वेंकट के मार्गदर्शन में आयोजित इस शिविर का शुभारंभ चेयरमैन शैलेश जैन और मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. अविनाश खरे की उपस्थिति में हुआ। शिविर में 11 रक्तदाताओं ने स्वेच्छा से रक्तदान किया। विशेष बात यह रही कि अंजनी यादव और जगदीप सिंह कोहली (23) ने सातवीं बार रक्तदान कर समाज के लिए प्रेरणादायक उदाहरण पेश किया। ब्लड डोनेशन करने वालों में जसपाल, रिंकेश खन्ना, विवेक जायसवाल, राजकुमार पांडेय, अंजनी यादव, रामनरेश पटेल, जयनारायण पांडेय, टी. विजय गोपाल राव, संजीत सिंह, जगदीप सिंह कोहली और हरीश गुप्ता शामिल थे। केंद्रीय चिकित्सालय मनेंद्रगढ़ के ब्लड बैंक इंचार्ज डॉ. लवलेश गुप्ता ने भी रक्तदान किया। कार्यक्रम की सफलता में रूपेंद्र सिंह, सिस्टर रश्मि गुप्ता, रेड क्रॉस सोसाइटी के नोडल अधिकारी सोमेश मंडल, विधिक साक्षरता शिविर के प्रतिनिधि अंजनी यादव और शंकर सिंह की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

कांग्रेसियों ने फूंका मुख्यमंत्री व गृहमंत्री का पुतला

ऑडीटर ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

सरगुजा . दुर्ग में मासूम बालिका की दुष्कर्म के बाद हत्या के विरोध में मंगलवार को सरगुजा कांग्रेस ने मुख्यमंत्री एवं गृहमंत्री का पुतला फूंका। कांग्रेसियों ने कहा कि प्रदेश में कानून व्यवस्था ध्वस्त हो गई है। कांग्रेस जिलाध्यक्ष बालकृष्ण पाठक ने कहा कि प्रदेश में सरकार कमीशनखोरी में चल रही है। बालकृष्ण पाठक ने केंद्रीय जांच एजेंसी सीबीआई, ईडी और इनकम टैक्स को पीएम मोदी का पालतू कुत्ता बताया है।

दुर्ग में मासूम बालिका की दुष्कर्म के बाद हत्या को लेकर सरगुजा कांग्रेस ने प्रदर्शन किया। कांग्रेस कार्यालय राजीव भवन से रैली निकाल कांग्रेसी कलेक्टोरेट चौक पहुंचे जहां प्रदेश के मुख्यमंत्री एवं गृहमंत्री का पुतला फूंका। कांग्रेसियों ने जमकर नारेबाजी करते हुए प्रदेश के मुख्यमंत्री व गृहमंत्री से इस्तीफा देने की मांग रखी। कांग्रेस जिलाध्यक्ष बालकृष्ण पाठक ने कहा कि छह साल के बच्ची की दुष्कर्म के बाद अत्यंत शर्मनाक घटना है। इसके विरोध में पूरे प्रदेश में कांग्रेस प्रदर्शन कर रही है। पाठक के कहा कि छत्तीसगढ़ अपराध का गढ़ हो गया है। यह भाजपा से नहीं संभल रहा है। मुख्यमंत्री व गृहमंत्री शर्म करें और पद से तत्काल इस्तीफा दें।

बालकृष्ण पाठक ने कहा कि पुलिस परिवार पर हमले हो रहे हैं, उनकी हत्या कर दी जा रही है। पुलिसकर्मी इस सरकार में सुरक्षित नहीं हैं। लॉ-एंड-ऑर्डर नाम की चीज प्रदेश में नहीं है। व्यवस्था इसलिए नहीं संभल रही है क्योंकि वे कमीशनखोरी में लगे हैं। इन्हें पैसा चाहिए। बालकृष्ण पाठक ने प्रदेश में कांग्रेसियों पर केंद्रीय जांच एजेंसियों नरेंद्र मोदी के पालतू हैं। जिसे बोलते हैं- टाइगर छू, तो उसके पीछे दौड़ते हैं। इनपर किसी का कोई कंट्रोल नहीं है। ये पालतू कुत्ते हैं। कांग्रेस के पुतला दहन के दौरान पुलिसकर्मियों ने जलते पुतलों को बुझाने की कोशिश की, जिसे लेकर झूमा-झटकी भी हुई। प्रदर्शन में अजय अग्रवाल, डॉ.अजय तिर्की, राकेश गुप्ता, हेमंत सिन्हा, मो.इस्लाम, अरविंद सिंह, हेमंत तिवारी, भानुप्रताप सिंह, संजीव मंदिलवार, धमेंद्र ताम्रकार सहित बड़ी संख्या में कांग्रेस एवं युवक कांग्रेस पदाधिकारी व कार्यकर्ता उपस्थित थे।

तीन बहनों ने मिलकर 26 लाख की ज्वेलरी चुराई

ऑडीटर ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

बिलासपुर में 3 बहनों ने मिलकर एक ज्वेलरी शॉप से तकरीबन 26 लाख के गहने चुराए हैं। तीनों फुफेरी और ममेरी बहनें हैं। तीनों बिल्हा के शिवशंकर ज्वेलर्स की नियमित ग्राहक थी और अक्सर कार में सवार होकर शॉपिंग के लिए पहुंचती और मौका मिलते ही सोने-चांदी के गहने पार कर देती। मामला बिल्हा थाना क्षेत्र का है। जानकारी के मुताबिक, उनका चोरी का यह सिलसिला पिछले 3 साल से चल रहा था। दुकान संचालक मनोहर जायसवाल को ग्राहकों के जाने के बाद जब दुकान में जेवर कम मिले, तब सीसीटीवी वीडियो चेक किया। जिसमें महिलाएं गहने चोरी करते हुए नजर आईं। जिसके बाद 2 अप्रैल को मामले की शिकायत की गई। जांच के बाद पुलिस ने तीन महिलाओं के साथ ही एक महिला के पति को भी गिरफ्तार कर लिया है। उनके पास से 23 तोला सोना, डेढ़ किलो चांदी और नगदी समेत 26 लाख 83 हजार रुपए का माल बरामद हुआ है।डीएसपी अनिता प्रभा मिंज ने बताया कि बीते 6 अप्रैल को जब संजना साहू (25) फिर से खरीदारी के बहाने दुकान पहुंची तो दुकान संचालक ने पुलिस को कॉल कर इसकी सूचना दी। जिसके बाद उन्हें गिरफ्तार किया गया। पूछताछ में उसने बहतराई निवासी अपनी बहन सीमा साहू (30), लगरा निवासी अनिता साहू (25) के साथ मिलकर गहनों की चोरी करना स्वीकार किया। पुलिस ने उनके पास से 230 ग्राम सोना, डेढ़ किलो चांदी और 4 लाख 47 हजार रुपए कैश बरामद किया है। चोरी की घटना में शामिल संजना के पति कोमल साहू (26) को भी गिरफ्तार किया है।डीएसपी अनिता प्रभा मिंज ने बताया कि चोरी किए गए जेवर बेचने का काम आरोपी महिलाओं के पति करते थे। पुलिस का दावा है कि इस मामले में कई आरोपी फरार हैं। उसने चोरी का सोना कई अलग-अलग दुकानों में बेचा है। जिनकी पकड़ में आने के बाद चोरी के और भी गहने बरामद होने की संभावना है। पूरे मामले में पुलिस की कार्रवाई पर सवाल उठ रहे हैं। पुलिस ने चोरी के केस में तीन महिला समेत चार आरोपियों को गिरफ्तार किया है, वहीं चोरी के जेवर खरीदने वालों का न तो कहीं नाम सामने आया है और न ही उन पर कोई कार्रवाई की गई है।केंवट के खिलाफ प्रतिबंधात्मक धाराओं के तहत कार्रवाई की गई है। इधर, हिंदूवादी संगठन के कार्यकर्ता राम सिंह ठाकुर ने कहा कि बिलासपुर धर्मांतरण का हब बनाने की कोशिश की जा रही है, जिसका वो लगातार विरोध कर रहे हैं। कोनी, सकरी, सिविल लाइन और मस्तूरी क्षेत्र के बाद अब सरकंडा के बहतराई में भोले-भाले हिंदुओं को लालच देकर फंसाने और धर्मांतरण कराने का खेल चल रहा था। उन्होंने आरोप लगाते हुए कहा कि हिंदुओं को प्रार्थना सभा के बहाने बुलाया जाता है, जहां प्रलोभन देकर उनका धर्म परिवर्तन कराया जाता है।

हाथी ने साइकिल सवार को दौड़ाकर मारा

ऑडीटर ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

बलरामपुर जिले के ग्राम चाकी में जंगली हाथी ने साइकिल सवार ग्रामीण को दौड़ाकर पकड़ लिया। फिर उठाकर 20 फीट दूर फेंक दिया। हमले में ग्रामीण की मौके पर ही मौत हो गई। घटना से आक्रोशित ग्रामीणों ने शव को उठाकर ले जाने का विरोध किया और प्रदर्शन करने लगे। बताया जा रहा है कि, एक हाथी झारखंड से छत्तीसगढ़ सीमा में घुसा है। ये हाथी 10 दिन में 4 लोगों की जान ले चुका है। वहीं एक और हाथी ने 2 लोगों की जान ली है। इस तरह 10 दिन में 6 ग्रामीणों की जान सिर्फ बलरामपुर जिले में ही जा चुकी है। जानकारी के मुताबिक, ग्राम चाकी में मंगलवार को भी एक ग्रामीण की मौत हाथी के हमले में हुई। ग्रामीण देवनारायण सिंह खैरवार (42 साल) मंगलवार सुबह 8 बजे जंगल के रास्ते से बसकटियापारा की ओर जा रहा था।

रास्ते में उसे जंगली हाथी ने दौड़ाकर सूंड से पकड़ लिया। हाथी ने ग्रामीण को उठाकर दूर फेंक दिया। हाथी के फेंके जाने पर देवनारायण दूर जा गिरा और उसकी मौके पर मौत हो गई। आसपास महुआ बिन रहे ग्रामीण डरकर मौके से भाग निकले और घटना की सूचना ग्रामीणों को दी। घटना की सूचना पर जिला पंचायत सदस्य संतोष यादव के साथ ग्रामीण बड़ी संख्या में पहुंच गए। जंगली हाथी के हमले में लगातार मौत से आक्रोशित जिला पंचायत सदस्य और ग्रामीणों ने वनविभाग को शव ले जाने से रोक दिया। इसकी जानकारी मिलने पर एसडीओ फॉरेस्ट अनिल कुमार पैंकरा, रेंजर संतोष पांडेय मौके पर पहुंचे। मृतक देवनारायण खैरवार की पत्नी की पहले ही मौत हो चुकी है। उसके दो बच्चे हैं, जिसमें लड़की ममता खैरवार कॉलेज तक पढ़ाई कर चुकी है और बेटा नाबालिग है।

इंडियाज गॉट लेटेंट विवाद,अलाहबादिया को नहीं मिलेगा पासपोर्ट

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंडियाज गॉट लेटेंट विवाद में पॉडकास्टर रणवीर अलाहबादिया की याचिका पर मंगलवार को सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई हुई। रणवीर ने अपने खिलाफ दर्ज अलग-अलग स्न्ढ्ढक्रको एक जगह क्लब करने की मांग की थी। इस पर जस्टिस सूर्यकांत और जस्टिस एन कोटिश्वर सिंह की बेंच ने सुनवाई की। अलाहबादिया की तरफ से वकील अभिनव चंद्रचूड़ कोर्ट में उनका पक्ष रखा। चंद्रचूड़ ने कोर्ट से उनका पासपोर्ट जमा करने से जुड़ी शर्त में छूट देने की मांग की। बेंच ने सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता से जांच की स्टेट्स रिपोर्ट मांगी। इसके जस्टिस सूर्यकांत ने कहा अगर अलाहबादिया को जल्दी-जल्दी ट्रैवल करने की परमिशन दी जाती है तो इससे जांच प्रभावित होगी। जब जरूरत होगी तो आप वहां नहीं होंगे। अलाहबादिया के वकील ने कहा कि देश-विदेश की बड़ी पर्सनैलिटी का इंटरव्यू करना ही उनकी आजीविका है। इस पर जस्टिस सूर्यकांत ने कहा कि उम्मीद है जांच दो हफ्ते में पूरी कर लेंगे। इसलिए अगली सुनवाई दो हफ्ते बाद होगी।

येशु-येशु वाले बजिंदर सिंह को रेप केस में उम्रकैद

मोहाली (एजेंसी)। येशु-येशु वाले बाबा के नाम से पहचाने जाने वाले पादरी बजिंदर सिंह को मोहाली कोर्ट ने मंगलवार को 7 साल पुराने रेप केस में उम्रकैद की सजा सुनाई। सजा से बचने के लिए पादरी बजिंदर कोर्ट में गिड़गिड़ाने लगा- मेरे बच्चे छोटे हैं। पत्नी बीमार है। मैं सोशल आदमी हूं। मेरी टांग में रॉड डली हुई है, मुझ पर रहम किया जाए। मगर कोर्ट ने उसकी दलीलों को खारिज कर दिया। बजिंदर को कोर्ट ने 3 दिन पहले दोषी करार दिया था। इसके बाद उसे पटियाला जेल भेज दिया गया था। बजिंदर पर आरोप है कि वह विदेश में बसाने का लालच देकर महिला को अपने घर ले गया। वहां उसका रेप करके वीडियो बनाया। उसे धमकी भी दी कि अगर विरोध किया तो वीडियो को सोशल मीडिया पर डाल देगा। पीड़ित के वकील ने बताया कि बजिंदर अंतिम सांस तक जेल में रहेगा।

रामनवमी पर होगा रामलला का सूर्यतिलक

नई दिल्ली (एजेंसी)। अप्रैल 2025 की शुरुआत हो गई है। 6 अप्रैल को रामनवमी और 14 अप्रैल को बैसाखी मनाई जाएगी। रामनवमी के मौके पर अयोध्या में रामलला का सूर्य तिलक होगा। इधर, 19 अप्रैल को पीएम मोदी कश्मीर की पहली जम्मू-श्रीनगर वंदे भारत एक्सप्रेस का उद्घाटन करेंगे। आईपीएल का रोमांच चरम पर होगा। महीनेभर में 36 मैच खेल जाएंगे। वहीं, इंडियन नेवी ग्रुप सी, जेईई मेन्स सेशन 2, कॉन्स्टेबल जैसे कई एग्जाम होंगे। इनके अलावा, राजकुमार राव की मूवी भूल चूक माफ 10 अप्रैल को रिलीज होगी ।डोनाल्ड ट्रम्प दुनियाभर में जैसे को तैसा टैरिफ लगाएंगे।

पर्यावरण संरक्षण का ध्यान रखकर ही करेंगे पर्यटन विकास-मुख्यमंत्री डॉ. यादव

भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि पर्यटन विकास के प्रयासों में पर्यावरण का भी ध्यान रखा जाना आवश्यक है। प्रकृति और पर्यावरण को क्षति पहुंचाए बिना ही पर्यटन?विकास के सभी प्रकल्प क्रियान्वित किए जाएंगे। इस संबंध में समुचित परीक्षण के बाद आवश्यक निर्णय लिए जाएं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव की अध्यक्षता में मध्यप्रदेश राज्य वेटलैंड प्राधिकरण की पांचवीं बैठक मंगलवार को मंत्रालय में संपन्न हुई। बैठक में वन एवं पर्यावरण राज्य मंत्री श्री दिलीप अहिरवार उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बैठक में प्रदेश में वेटलैण्ड्स के भौतिक सत्यापन और सीमांकन कार्य की जानकारी प्राप्त कर सभी कार्यों को पूर्ण करने के निर्देश दिए। बैठक में बताया गया कि इसरो-एसएसी-2021 (इसरो के अंतरिक्ष अनुप्रयोग केन्द्र) एटलस के अनुसार प्रदेश में भौतिक सत्यापन और सीमांकन का कार्य पर्यावरण विभाग के राज्य वेटलैण्ड प्राधिकरण द्वारा किया जा रहा है। यह वेटलैण्ड्स 2.25 हैक्टेयर क्षेत्रफल से अधिक के हैं। यह कार्य राजस्व विभाग और वन विभाग के सहयोग और संबंधित जिला प्रशासन के नेतृत्व में सम्पन्न करवाया जा रहा है। प्रदेश में 31 मार्च 2025 को समाप्त वित्त वर्ष में 13 हजार 454 वेटलैण्ड्स का जमीनी सत्यापन और 12 हजार 741 वेटलैण्ड्स के सीमांकन का कार्य पूरा हो चुका है। प्रदेश में कुछ ही वेटलैण्ड्स शेष हैं, जहां यह कार्य अभी चल रहा है। एक नया मोबाइल एप भी तैयार किया गया है। इस कार्य के लिए प्रदेश के 55 जिलों में लगभग 5 हजार कर्मचारियों को ऑनलाइन प्रशिक्षण प्रदान किया गया है।

कुणाल कामरा को मद्रास होईकोर्ट से ट्रांजिट अग्रिम जमानत मिली

नई दिल्ली (एजेंसी)। स्टैंड-अप कॉमेडियन कुणाल कामरा मंगलवार को मद्रास हाईकोर्ट में पेश हुए। उन्होंने दावा किया कि पुलिस उन्हें गिरफ्तार करने की कोशिश कर रही है। इसलिए उन्हें ट्रांजिट अग्रिम जमानत दी जाए। कामरा के दावे पर जस्टिस सुंदर मोहन ने उन्हें वनूर कोर्ट में पेश होने का निर्देश दिया। जहां से कामरा को ट्रांजिट अग्रिम जमानत मिली गई। इससे पहले 28 मार्च को हाईकोर्ट ने कामरा को 7 अप्रैल तक की अग्रिम जमानत दी थी।

भाजपा के नए अध्यक्ष की घोषणा इसी महीने

नई दिल्ली (एजेंसी)। भाजपा को नया राष्ट्रीय अध्यक्ष इसी महीने मिल जाएगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नागपुर दौरे के बाद चुनावी प्रक्रिया तेज हो गई है। सूत्रों के मुताबिक 30 मार्च को मोदी और संघ प्रमुख मोहन भागवत की मुलाकात में नए अध्यक्ष के नाम पर चर्चा हुई है। मोदी के नागपुर से लौटने के बाद पार्टी के वरिष्ठ नेताओं से भी बातचीत हुई है। प्रधानमंत्री ने वर्तमान अध्यक्ष जेपी नडडा, अमित शाह, राजनाथ सिंह और संगठन महामंत्री बीएल संतोष से राज्यों के संगठनात्मक चुनाव पर चर्चा की। सूत्रों के मुताबिक, प्रधानमंत्री ने नड्डा और बीएल संतोष से कहा है कि इसी महीने भाजपा अध्यक्ष का चुनाव पूरा करें।

भाजपा ने अब तक 13 राज्यों में प्रदेश अध्यक्ष चुन लिए हैं। राष्ट्रीय अध्यक्ष के चुनाव के लिए 19 राज्यों में चुनाव पूरे करने जरूरी हैं। सूत्रों के मुताबिक अगले हफ्ते तक उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल समेत बाकी बचे अधिकांश राज्यों के प्रदेश अध्यक्षों के नामों की घोषणा कर दी जाएगी। यानी 50 प्रतिशत राज्यों के चुनाव पूरा होने के बाद राष्ट्रीय अध्यक्ष का चुनाव किया जा सकेगा।

सुप्रीम कोर्ट बोला- प्रयागराज के बुलडोजर एक्शन ने झकझोर दिया

प्रयागराज (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को प्रयागराज डेवलपमेंट अथॉरिटी को मकान गिराने पर फटकार लगाई। कोर्ट ने अधिकारियों के बुलडोजर एक्शन को अमानवीय और अवैध बताया। साथ ही कहा- 2021 में हुई इस कार्रवाई के दौरान दूसरों की भावनाओं और अधिकारों का ख्याल नहीं रखा गया। जस्टिस अभय एस ओका और जस्टिस उज्जवल भुइयां की बेंच ने कहा- देश में लोगों के रिहायशी घरों को इस तरह से नहीं गिराया जा सकता है। इसने हमारी अंतरआत्मा को झकझोर दिया है। प्रयागराज प्रशासन ने 2021 में गैंगस्टर

अतीक की प्रॉपर्टी समझकर एक वकील, प्रोफेसर और 3 अन्य के मकान गिरा दिए थे। सुप्रीम कोर्ट में वकील जुल्फिकार हैदर, प्रोफेसर अली अहमद और अन्य लोगों ने याचिका दाखिल की थी। ये वो लोग हैं, जिनके मकान तोड़े गए थे।

वक्फ संशोधन बिल लोकसभा में आज 12 बजे पेश होगा

नई दिल्ली। वक्फ संशोधन बिल 2 अप्रैल को प्रश्नकाल के बाद दोपहर 12 बजे लोकसभा में पेश होगा। स्पीकर ओम बिरला ने इस पर 8 घंटे चर्चा का समय निर्धारित किया है। एनडीए को बहस में बोलने के लिए 4 घंटे 40 मिनट का समय मिला है। बाकी के वक्त विपक्ष के नेता बोलेंगे। बिजनेस एडवाइजरी कमेटी ने जब इस बात की जानकारी दी। विपक्ष ने कहा कि चर्चा 12 घंटे होनी चाहिए। संसदीय कार्यमंत्री किरेन रिजिजू ने कहा कि बिल पर चर्चा का समय बढ़ाया जा सकता है। इसके बाद बिल

लोकसभा में पास किया जाएगा।

हालांकि, विपक्ष ने बीएसी की बैठक से वॉकआउट कर दिया। कांग्रेस सांसद गौरव गोगोई ने सरकार पर अपने एजेंडे को थोपने और विपक्षी सदस्यों की बात नहीं सुनने का आरोप लगाया। लोकसभा में बहस के लिए भाजपा, कांग्रेस, जेडीयू, टीडीपी समेत पार्टियों ने अपने सांसदों के लिए व्हिप जारी किया। संसदीय कार्य मंत्री बोले- देश जानना चाहता है किसका क्या स्टैंड भाजपा ने व्हिप जारी कर अपने सांसदों को सदन में पूरे समय मौजूद रहने को कहा है। वहीं, कांग्रेस ने अपने सभी सांसदों को बजट सत्र के बाकी बचे तीनों दिन सदन में मौजूद रहने के लिए व्हिप जारी किया है। संसदीय कार्यमंत्री किरण रिजिजू ने कहा कि हम बिल पर चर्चा चाहते हैं। सभी राजनीतिक दलों को इस पर बोलने का अधिकार है। देश भी जानना चाहता है कि किस पार्टी का क्या स्टैंड है।

भाजपा नेता बोले- 75 साल में रिटायरमेंट का नियम नही

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र भाजपा अध्यक्ष चंद्रशेखर बावनकुले ने संजय राउत को कहा- पीएम मोदी के नेतृत्व में ही 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने का संकल्प साकार होगा। महाराष्ट्र भाजपा अध्यक्ष चंद्रशेखर बावनकुले ने मंगलवार को बोला कि पार्टी में 75 साल की उम्र में रिटायरमेंट का कोई नियम नहीं है। साथ ही प्रधानमंत्री मोदी का कार्यकाल देश की

जनता तय करेगी। दरअसल बावनकुले ने यह प्रतिक्रिया शिवसेना नेता संजय राउत के बयान पर दिया, जिसे बीजेपी ने पॉलिटिकल स्टंट बताया। बीजेपी में ऐसा कोई नियम नहीं है कि मोदी को 75 साल की उम्र के बाद राजनीति से संन्यास लेना चाहिए, न ही ऐसा कोई निर्णय लिया गया है। भारतीय संविधान में भी ऐसी कोई बाध्यता नहीं है। पूर्व प्रधानमंत्रियों में अटल बिहारी वाजपेयी ने 79 साल की उम्र तक, मोरारजी देसाई ने 83 साल की उम्र तक, और डॉ. मनमोहन सिंह ने 81 साल की उम्र तक पद संभाला था।

राजस्थान में फैक्ट्री से गैस-लीक, मालिक सहित 3 की मौत

ब्यावर (एजेंसी)। ब्यावर में तेजाब फैक्ट्री के गोदाम में खड़े टैंकर से नाइट्रोजन गैस के लीक होने से कंपनी मालिक सहित 3 की मौत हो गई। दो लोगों की हालत अब भी गंभीर है। हादसे से प्रभावित 60 से ज्यादा लोगों ब्यावर और अजमेर सरकारी हॉस्पिटल में एडमिट कराया गया था। गैस के असर से कई पालतू जानवर और आवारा कुत्तों की भी मौत हुई है। घटना ब्यावर थाने के बाड़िया क्षेत्र की सुनील ट्रेडिंग कंपनी में सोमवार रात 10 बजे की है। फैक्ट्री के नजदीक के कई घरों को खाली करवाया गया है। इस हादसे में कंपनी मालिक सुनील सिंघल (47) की मौत हो गई। वो रातभर गैस को नियंत्रित करने का प्रयास कर रहे थे। तबीयत बिगड़ने पर उन्हें अजमेर जेएलएन हॉस्पिटल रेफर किया गया था। सोमवार रात को ही इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई। वहीं, मंगलवार सुबह दो और पीड़ित नरेंद्र सोलंकी (40) और दयाराम (52) ने भी दम तोड़ दिया। जेएलएन में दो मरीज अब भी गंभीर हालत में एडमिट हैं। इनमें ब्यावर निवासी बाबूलाल (54) पुत्र कालूजी, लक्ष्मी देवी (62) पत्नी कैलाश शामिल हैं। जानकारी के अनुसार कंपनी के गोदाम में खड़े टैंकर से नाइट्रोजन गैस का रिसाव हुआ। रिसाव इतना तेज था कि कुछ सेकेंड में ही गैस आसपास के रिहायशी इलाके में फैल गई। घरों के अंदर मौजूद लोग भी इसकी चपेट में आ गए। लोगों को दम घुटने के साथ आंखों में जलन की भी परेशानी हुई।

जम्मू-कश्मीर के कठुआ में एनकाउंटर, 1 आतंकी मारा गया

श्रीनग (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के कठुआ में पंजतीर्थी मंदिर के पास सोमवार रात से चल रही मुठभेड़ में एक आतंकी मारा गया है। हालांकि, सुरक्षाबलों ने इसकी आधिकारिक पुष्टि नहीं की है। सेना के राइजिंग स्टार कॉर्प्स के मुताबिक 31 मार्च की रात इलाके में संदिग्ध गतिविधि की सूचना मिली, जिसके बाद सेना ने राजबाग के रुई, जुथाना, घाटी और सान्याल के जंगली इलाकों के साथ-साथ बिलावर के कुछ हिस्सों में सर्च ऑपरेशन अभियान चलाया। पंजतीर्थी में आतंकियों की तरफ से फायरिंग के बाद एनकाउंटर शुरू हो गया। सुरक्षाबलों ने रातभर इलाके की घेराबंदी की, ताकि जंगल में छिपे 3 आतंकी भाग न सकें। हालांकि, मंगलवार सुबह 7 बजे के बाद फायरिंग रुकी है। कश्मीर पुलिस, एनएसजी, सीआरपीएफ और बीएसएफ स्निफर डॉग्स और ड्रोन की मदद से आतंकियों की तलाश कर रही है। बीते 9 दिनों में कठुआ में सुरक्षाबलों की आतंकियों से यह तीसरी मुठभेड़ है।

जोधपुर जेल में आसाराम ने सरेंडर किया

जोधपुर (एजेंसी)। नाबालिग से रेप करने वाला आसाराम ने जोधपुर जेल में सरेंडर कर दिया है। पैर में प्लास्टर बांधकर पहुंचे आसाराम की अंतरिम जमानत 31 मार्च को समाप्त हो गई है। आसाराम के वकील ने जमानत अवधि बढ़ाने के लिए याचिका दाखिल की है, जिस पर कोर्ट 2 अप्रैल को सुनवाई करेगी। कोर्ट में 29 से 31 मार्च तक छुट्टी के बाद मंगलवार को आसाराम के वकील निशांत बोड़ा ने सुनवाई

का आग्रह किया था। इससे पहले गुजरात हाईकोर्ट में सुनवाई के बाद आसाराम को 3 महीने की अंतरिम जमानत दी गई है। राजस्थान हाईकोर्ट के वकील दिनेश जैन ने बताया- आसाराम की ओर से अंतरिम जमानत अवधि बढ़ाने के आवेदन पर बुधवार को सुनवाई होगी। यदि कोर्ट अंतरिम जमानत की अवधि नहीं बढ़ाती है तो आसाराम को जेल में ही रहना होगा। जब तक दोनों ही मामलों में उसे राहत नहीं मिलती है, तब तक वह जेल से बाहर नहीं आ सकेगा। लंबित है एक्सटेंशन एप्लिकेशन- आसाराम की ओर से राजस्थान हाईकोर्ट में पहले एक याचिका नियमित जमानत के लिए लगाई गई थी। उसमें राहत मिलने की उम्मीद नजर नहीं आने पर याचिका को वापस ले लिया गया था। इसके बाद एक अन्य याचिका अंतरिम जमानत बढ़ाने को लेकर दायर की गई थी। राजस्थान हाईकोर्ट ने आसाराम को पहले गुजरात हाईकोर्ट में याचिका दायर करने को कहा गया।

अनंत अंबानी ने बूचड़खाने जा रही 250 मुर्गियां बचाई

गुजरात (एजेंसी)। रिलायंस इंडस्ट्रीज के चेयरपर्सन मुकेश अंबानी के बेटे अनंत अंबानी 140 किलोमीटर की पदयात्रा कर रहे हैं। वे जामनगर से द्वारका जा रहे है। आज (1 अप्रैल) पदयात्रा का पांचवां दिन है। वे 50 किलोमीटर की दूरी तय कर सोनारडी गांव के पाटिया पहुंच चुके हैं। रास्ते में अनंत ने बूचड़खाने जा रही 250 मुर्गियों को बचाया।

उन्होंने दोगुनी कीमत देकर सभी मुर्गियों को खरीदा और आजाद कर दिया । वे एक मुर्गी को लेकर चलते भी दिखे। अनंत अंबानी के साथ हिरेन हिरपरा भी पैदल चल रहे हैं। 10 अप्रैल को अनंत अंबानी का जन्मदिन है। अनंत अपना 30वां जन्मदिन द्वारका में ही मनाएंगे। अनंत ने अपनी यात्रा 28 मार्च को जामनगर के मोती खावड़ी से शुरू की थी। लोगों को ट्रैफिक और सिक्योरिटी के चलते मुश्किल का सामना न करना पड़े, इसलिए अनंत रात में यात्रा करते है।

काल भैरव को ब्लैक में खरीदकर चढ़ाई शराब

उज्जैन (एजेंसी)। मध्यप्रदेश में नई आबकारी नीति के तहत 1 अप्रैल से 17 धार्मिक शहरों में शराबबंदी लागू कर दी गई है। इसके साथ ही उज्जैन के काल भैरव मंदिर के सामने की दोनों शराब दुकानें भी बंद कर दी गई हैं। अब भक्तों के सामने भगवान को मदिरा का प्रसाद चढ़ाने की समस्या खड़ी हो गई है। वहीं, अब शराब ब्लैक में दोगुने दाम पर बेची जा रही। शराबबंदी को लेकर महाकाल के सेनापति काल भैरव को चढ़ाई जाने वाली शराब को लेकर असमंजस की स्थिति थी। इसे लेकर अब तक कोई फैसला नहीं होने के चलते मंगलवार से मंदिर के सामने स्थित शराब की दोनों दुकानें भी बंद कर दी गईं।

बता दें, मध्यप्रदेश के 19 धार्मिक स्थलों पर 47 शराब की दुकानों को बंद करने के बाद नगर निगम सीमा में आने वाली सभी दुकानों को भी बंद कर दिया गया है। नियम के मुताबिक, इन दुकानों को कहीं और शिफ्ट नहीं किया गया है। धार्मिक नगरी उज्जैन में भी 17 शराब की दुकानों समेत 11 बार बंद कर दिए गए हैं। आज मंगलवार सुबह मंदिर में दर्शन करने पहुंचे कई भक्त अपने साथ शराब लेकर आए थे। उन्होंने कहा कि हमें जानकारी मिली थी कि शराबबंदी का निर्णय लिया गया है, इसलिए हम अपने साथ शराब लेकर आए हैं। कुछ को मंदिर आकर पता चला कि शराब नहीं मिल रही है।

गुजरात के बनासकांठा में पटाखा फैक्ट्री का बॉयलर फटा, एमपी के 21 मजदूरों की मौत

अहमदाबाद (एजेंसी)। गुजरात के बनासकांठा के नजदीक डीसा में मंगलवार सुबह 8 बजे पटाखा फैक्ट्री में बॉयलर फटने से मध्य प्रदेश के 21 मजदूरों की मौत हो गई। वहीं, 5 मजदूर मामूली रूप से घायल हैं। फैक्ट्री डीसा तहसील के धुनवा रोड पर है। विस्फोट के दौरान मजदूर फैक्ट्री में काम कर रहे थे। विस्फोट इतना भीषण था कि कई मजदूरों के अंग 50 मीटर दूर तक बिखर गए। फैक्ट्री के पीछे खेत में भी कुछ मानव अंग मिले हैं।

फायर ब्रिगेड को आग पर काबू पाने में 5 से 6 घंटे लगे। 2 दिन पहले ही मजदूरी के लिए आए थे हादसे के शिकार

सभी मृतक और घायल मजदूर मध्य प्रदेश के हरदा जिले के हंडिया गांव के रहने वाले हैं। फैक्ट्री से मिली जानकारी के मुताबिक सभी 2 दिन पहले ही मजदूरी के लिए यहां आए थे और पटाखे बनाने का काम कर रहे थे। फिलहाल, मृतकों की पहचान की जा रही है।

आईपीएल के शुरुआती सत्र में पाक क्रिकेटर ने जीती थी पर्पल कैप

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) की आजकल धूम है और इसमें दुनिया भर के क्रिकेटर नजर आ रहे है हालांकि पाकिस्तान के खिलाड़ियों को इसमें शामिल नहीं किया जाता पर साल 2008 में हुए सत्र में पाक खिलाड़ियों को भी इसमें खेलने का अवसर मिला था। तब पाक के एक खिलाड़ी सोहेल तनवीर ने शेन वार्न की कप्तानी में राजस्थान रॉयल्स की ओर से शानदार प्रदर्शन करते हुए अपनी टीम को जीत दिलायी थी। तनवी को तब रॉयल्स ने 40.16 लाख रुपए रुपये में खरीदा था। इस गेंदबाज को सबसे अधिक विकेट के लिए पर्पल कैप भी मिली थी।

इस गेंदबाज ने तब 11 मैचों में कुल 22 विकेट लिए थे। उनके इस शानदार प्रदर्शन से राजस्थान टीम टूर्नामेंट के फाइनल में पहुंची थी। फाइनल में भी तनवीर ने 1 विकेट लेकर टीम की सीएसके पर जीत में अहम भूमिका निभाई थी। तनवीर को राजस्थान ने नीलामी में साल 2008 में खरीदा था। तब वह 40.16 लाख रुपए में राजस्थान की टीम में शामिल हुए थे। सोहेल ने पहले ही सत्र में ही सबसे अधिक विकेट लेकर पर्पल कैप जीती थी। उन्होंने 11 मैचों में सबसे अधिक 22 विकेट लिए थे।

बेहतर फुटबॉलर बनने ट्रेनर की सलाह पर ध्यान दे भारतीय खिलाड़ी -एडमिल्सन

नई दिल्ली (एजेंसी)। जोस एडमिल्सन ने कहा कि भारतीय टीम के खिलाड़ियों को बेहतर बनने के लिए ट्रेनर की सलाह पर सबसे अधिक ध्यान देना चाहिये। एडमिल्सन रियाल मैड्रिड और एफसी बार्सिलोना की ओर से भी खेले हैं। एडमिल्सन के अनुसार फुटबॉल प्रबंधन को ये भी देखना चाहिये की खिलाड़ी क्या चाहते हैं। एडमिल्सन अभी पूर्व खिलाड़ियों के एक टूर्नामेंट के लिए भारत आये हुए हैं। एडमिल्सन ने कहा, ''एक अच्छा फुटबॉल खिलाड़ी बनने की तकनीक हासिल करने से पहले कई तरह की चीजों को सीखना होता है। इसलिए खिलाड़ियों को ट्रेनर की शिक्षा पर ध्यान देना होगा और देखना होगा कि वे क्या चाहते हैं।'' ब्राजील की 2002 विश्व कप विजेता फुटबॉल टीम के सदस्य रहे इस खिलाड़ी ने कहा, ''एक अच्छा खिलाड़ी बनाने से पहले उन्हें एक अच्छा इंसान बनाना होगा। और यह बहुत अहम है। कई जगहों पर बच्चे खिलाड़ी बनने का सपना देखते हैं पर उन्हें कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है जिनका समाधान करना होगा।

'' पेपे अर्जेंटीना के लियोनेल मेस्सी की तुलना में पुर्तगाल टीम के उनके साथी क्रिस्टियानो रोनाल्डो को अच्छा डिफेंडर मानते हैं। इस खिलाड़ी ने कहा, ''मुझे क्रिस्टियानो रोनाल्डो का नाम लेना होगा क्योंकि मैं उनके साथ ट्रेनिंग करता हूं। मुझे पता है कि उनके खिलाफ कितना कठिन है। '' उन्होंने कहा, ''क्रिस्टियानो एक ऐसे फुटबॉलर रहे हैं।

क्लासिक भाला फेंक इवेंट में खेलते नजर आयेंगे नीरज

नई दिल्ली (एजेंसी)। ओलंपिक पदक विजेता भाला फेंक खिलाड़ी नीरज चोपड़ा अगले माह हरियाणा के पंचकूला में एक घरेलू टूर्नामेंट में भाग लेंगे। नीरज यहां 24 मई को क्लासिक भाला फेंक इवेंट में शामिल होंगे। इसी के साथ ही नीरज एक साल से भी अधिक समय के बाद किसी घरेलू टूर्नामेंट में भारतीय टीम की ओर से खेलते हुए दिखेंगे। इससे पहले घरेलू मैदान पर अंतिम बार वह मई 2024 में भुवनेश्वर में फेडरेशन कप में उतरे थे। अब 374 दिनों के बाद नीरज भारत में प्रतिस्पर्धा करते दिखेंगे। इससे पहले अंतिम बार वह मई 2024 में भुवनेश्वर में फेडरेशन कप में उतरे थे। भारतीय एथलेटिक्स महासंघ (एएफआई) के अध्यक्ष बहादुर सिंह सागू ने कहा कि नीरज चोपड़ा के अलावा इस क्लासिक इवेंट में विश्व के कई अन्य टॉप भाला फेंक खिलाड़ी शामिल होंगे।

इस प्रतियोगिता की तैयारियों अभी जारी है। नीरज टोक्यो ओलंपिक के स्वर्ण पदक विजेता है हालांकि पेरिस ओलंपिक में वह रजत पदक ही जीत पाये थे। विश्व चैम्पियनशिप सही कई और अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में वह नंबर एक स्थान पर रहे हैं। सागू ने कहा कि इस टूर्नामेंट से सभी को अंदाज हो जाएगा कि भारत एथलेटिक्स के क्षेत्र में आगे बढ़ रहा है।

सिराज आईपीएल में 100 विकेट लेने वाले खिलाड़ियों में शामिल

नई दिल्ली (एजेंसी)। गुजराज टाइटंस के तेज गेंदबाज मोहम्मद सिराज ने यहां सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ हुए मुकाबले में चार विकेट लेकर एक अहम उपलब्धि हासिल की है। सिराज अब इस लीग में 100 विकेट लेने वाले 26 वें गेंदबाज बन गये है। इससे पहले भारतीय गेंदबाजों की बात करें तो भुवनेश्वर कुमार, जसप्रीत बुमराह, उमेश यादव, संदीप शर्मा, हर्षल पटेल, मोहित शर्मा, मोहम्मद शमी, आशीष नेहरा, आर विनय कुमार, जहीर खान और शार्दुल ठाकुर ने ही 100 विकेट लिए हैं। सिराज अपने इस प्रदर्शन के साथ ही सबसे अधिक विकेट के लिए मिलने वाली पर्पल कैप के भी दावेदार बनकर उभरे हैं।

सिराज ने सनराइजर्स के खिलाफ 17 रन देकर 4 विकेट लिए और हैदराबाद को 152 रन पर रोक दिया। अब उनके नाम पर 4 मैचों में 13 की औसत के साथ 9 विकेट हो गए हैं। वह पर्पल कैप की दौड़ में दूसरे नंबर पर हैं।

सिराज ने गत दिनों जब आरसीबी के खिलाफ 19 रन देकर 3 विकेट ली थी तो टीम कोच आशीष नेहरा ने उनकी जमकर तारीफ की थी। उन्होंने कहा कि सिराज ने दिखाया कि वह नई गेंद के साथ कितने खतरनाक हो सकते हैं। उनकी फिटनेस और गति में सुधार प्रभावशाली है। इसके अलावा, भारतीय टीम के गेंदबाजी कोच मोर्ने मोर्कल ने भी सिराज की आक्रामकता की तारीफ की है। बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी से पहले मोर्कल ने कहा कि सिराज 100 फीसदी देने वाला खिलाड़ी है। वह पूरे दिन दौड़कर गेंदबाजी कर सकता है और टीम के लिए हमेशा संघर्ष करता है। कोचों का मानना है कि सिराज का जुझारूपन और सीखने की ललक उन्हें विशेष खिलाड़ी बनाती है।

सिराज ने साल 2017 में सनराइजर्स हैदराबाद के साथ डेब्यू किया और 6 मैचों में 10 विकेट लिए। 2018 में रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर (आरसीबी) में शामिल होने के बाद वह टीम के प्रमुख गेंदबाज बने। अब तक, सिराज ने 96 आईपीएल मैच खेले हैं और 8.66 की इकॉनमी रेट के साथ 98 विकेट हासिल किए हैं। उनकी सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजी 4/21 है।

2020 में कोलकाता नाइट राइडर्स के खिलाफ उन्होंने लगातार दो मेडन ओवर फेंके, जो आईपीएल इतिहास में पहली बार हुआ। 2023 में उन्होंने 19 विकेट लिए, जो उनका सर्वश्रेष्ठ सीजन रहा।

क्लार्क ने यशस्वी और सैमसन की जोड़ी को शानदार बताया

नई दिल्ली (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया के पूर्व कप्तान माइकल क्लार्क ने आइपीएल टीम राजस्थान रॉयल्स के बल्लेबाजों यशस्वी जायसवाल और संजू सैमसन की जोड़ी की जमकर प्रशंसा की है। क्लार्क ने कहा है कि ये दोनो किसी भी मैच को पलट सकते हैं। क्लार्क ने कहा, 'जायसवाल शुरुआती मैच में असफल होने के कारण पंजाब के खिलाफ बल्लेबाजी के दौरान ज़्यादा सतर्क थे। कुछ अच्छे शॉट्स लगाने से उनका मनोबल बढ़ा जिससे टीम तेजी से आगे बढ़ी। वह मैदान के चारों ओर शॉट मारता है। उसे लेग साइड पसंद है, लेकिन कीपर के ऊपर से ऊपर की ओर शॉट

मारना और उसका कवर ड्राइव उसके पास सभी शॉट हैं। अगर वह शुरुआत में संयम से खेले और कुछ गेंदें और पहले ओवर में जमीनी शॉट लगाये तो विरोधी टीम के लिए काफी मुश्किलें पैदा कर सकता है।

उन्होने कहा, 'राजस्थान रॉयल्स पहले से अलग टीम नजर आयी है। उसकी सलामी जोड़ी विस्फोटक है। उसके बल्लेबाज काफी अच्छे हैं। वहीं भारतीय टीम के पूर्व बल्लेबाज संजय मांजरेकर ने युवा रियान पराग की जमकर प्रशंसा की ओर कहा, 'मुझे वाकई लगता है कि राजस्थान रॉयल्स के लिए पंजाब के खिलाफ मैच में रियान पराग की पारी काफी अहम थी। ये सही है कि उन्हें यशस्वी ने उन्हें अच्छी शुरुआत दी पर बाद में पराग ने स्कोर आगे बढ़ाया। वह जानते हैं और भरोसा करते हैं कि धीमी शुरुआत की भरपाई किस प्रकार की जा सकती है। पहली 13 गेंदों में उनका स्ट्राइक रेट 100 से थोड़ा ज़्यादा था। अगली 13-14 गेंदों में यह 200 के करीब था। उस पारी ने राजस्थान रॉयल्स को काफी अच्छी स्थिति में पहुंचा दिया। इसके बाद रही सही कसर गेंदबाजी में तीन विकेट लेकर जोफ्रा आर्चर ने पूरी कर दी।

धोनी बोले, आईपीएल से संन्यास का फैसला फिटनेस के आधार पर करुंगा

नई दिल्ली (एजेंसी)। चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके) के पूर्व कप्तान महेंद्र सिंह धोनी ने कहा है कि अभी वह इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) से संन्यास नहीं ले रहे और इस मामले में कोई भी फैसला अपनी फिटनेस के आधार पर करेंगे। धोनी ने कहा कि वर्तमान सत्र के बाद अपनी फिटनेस का आंकलन करने के बाद ही वह अगले सत्र में खेलने पर कोई फैसला करेंगे। वहीं आईपीएल से संन्यास के बारे में पूछे गए सवाल पर धोनी ने कहा कि मैं अभी भी आईपीएल में खेल रहा हूं और इसी पर ध्यान दे रहा हूं। मैं अभी 43 साल का हूं और एक बार में एक साल तक की ही बात कर सकता हूं। जब यह सत्र खत्म होगा, तब तक मैं 44 साल का हो जाऊंगा। इसलिए, मेरे पास यह तय करने के लिए अभी करीब 10 महीने हैं कि मैं अगले साल खेल सकता हूं या नहीं।

उन्होंने कहा कि ये मेरे चाहने या न चाहते की जगह फैसला इस पर आधारित होगा कि मेरा शरीर क्या चाहता है। यह शरीर है जो आपके लिए फैसले लेता है। मैं खेल जारी रख सकता हूं या नहीं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि मैं शारीरिक रूप से कैसा महसूस करता हूं। अभ मैं इस बात पर पूरी तरह से ध्यान केंद्रित कर रहा हूं कि इस सत्र में क्या करना होगा। वहीं इस सत्र में धोनी का प्रदर्शन कुछ खास नहीं रहा और वह बल्लेबाजी में भी निचले क्रम पर उतरे। धोनी ने कहा कि खेल में मिली सफलता कड़ी मेहनत और अनगिनत व्यक्तियों के समर्थन का परिणाम हैं। उन्होंने कहा कि स्कूल के दिनों से ही मेरे माता-पिता, मेरे खेल शिक्षक और वे लोग जिनके साथ मैंने अपने शुरुआती मैच खेले, सभी ने इसमें भूमिका निभाई। यहां तक कि टेनिस-बॉल क्रिकेट ने भी मुझे कई चीजें सिखाईं, हालांकि इसमें भी कुछ अजीब चीजें भी हैं। उन्होंने कहा कि असफलताएं खेल का हिस्सा हैं पर जो मायने रखता है वह वापसी करने की क्षमता है। धोनी ने कहा कि जीवन में कोई बड़ा या छोटा अवसर नहीं होता। सभी मायने रखते हैं। मैं कई लोगों का आभारी हूं। कुछ को तो यह भी नहीं पता होगा कि मैं उनका आभारी हूं।

अगले माह टेनिस कोट में वापसी करेंगे सिनर

नई दिल्ली (एजेंसी)। विश्व के नंबर एक खिलाड़ी यानिक सिनर अब पांच मई से एक बार फिर टेनिस कोर्ट पर खेलते नजर आयेंगे। सिनर सभी ग्रैंड स्लैम टूर्नामेंट खेल पाएंगे और उन्होंने विश्व में जो नंबर एक रैंकिंग हासिल की थी वह भी पहले की तरह ही रहेगी। सिनर को गत वर्ष मई में प्रतिबंधित एनाबॉलिक स्टेरॉयड के सेवन का दोषी पाया गया था जिसके बाद से ही वह निलंबित चल रहे थे पर इसके बाद उनका उनका विश्व डोपिंग रोधी एजेंसी (वाडा) से समझौता हो गया था। इससे बाद उन्हें केवल तीन माह ही निलंबन में और गुजारने थे। ये निलंबर इसी माह समाप्त हो जाएगा। इस दौरान उनके जीते खिताब ओर ईनामी राशि भी वापस नहीं ली जाएगी। उनको इस प्राकर की सुविधा मिलने से काफी विवाद भी उठा था। वहीं विश्व के कई दिग्गज टेनिस खिलाड़ियों ने नाराजगी भी जतायी थी। इन खिलाड़ियों का का मानना है कि डोपिंग मामले में इस प्रकार का समझौता सही नहीं है। इससे खेलों में डापिंग को बढ़ावा मिलेगा। वहीं जो खिलाड़ी इस प्रकार के कामों में लिप्त नहीं होते उन्हें ये अपने साथ धोखा लगेगा क्योंकि डोपिंग में लिप्त खिलाड़ी भी उन्हीं के बराबर में आ जाएंगे। ऐसे में लोग सभी को समान मानेंगे। इसी को लेकर तीन बार के ग्रैंड स्लैम चैंपियन स्विटजरलैंड के स्टैन वावरिंका ने सोशल मीडिया में लिखा, 'खेल में पारदर्शिता नहीं रहेगी।वहीं विंबलडन उपविजेता निक किर्गियोस ने कहा, 'टेनिस में अब निष्पक्षता पर सवाल उठे। सिनर की टीम ने केवल तीन महीने का प्रतिबंध लगाने के लिए अपनी तरफ से पूरी शक्ति लगा दी। उन्हें स्टार खिलाड़ी होने का लाभ मिला जो गलत तरीका है। वहीं दानिल मेदवेदेव ने कहा कि अब हर कोई डोपिंग में लिप्त होने के बाद इसी प्रकार से समझौते करेगा।

रूमर्ड गर्लफ्रेंड सोफी शाइन के साथ एयरपोर्ट पर हुए स्पॉट शिखर धवन

नई दिल्ली (एजेंसी)। शिखर धवन इन दिनों अपने रिश्ते को लेकर सुर्खियों में हैं। उन्हें पिछले कुछ दिनों से अलग-अलग जगह सोफी शाइन नाम की लड़की के साथ स्पॉट किया जा रहा है। दोनों के बीच डेटिंग की खबरें भी तेज हो गई हैं। दरअसल, पूर्व भारतीय ओपनर का तलाक साल 2023 में हो गया था। अपनी पूर्व पत्नी आयशा मुखर्जी से अलग होने के बाद से शिखर लगभग डेढ़ साल तक अपनी जिंदगी में अकेले रहे। लेकिन अब उनके फैंस की दुआओं का नतीजा है कि वह अब अकेले नहीं हैं।

चैंपियंस ट्रॉपी के बाद शिखर धवन और सोफी शाइन को एक शादी में भी साथ देखा गया, जिसमें दोनों की साथ में कुछ तस्वीरें भी सामने आई थीं। वहीं, हाल ही में एक इवेंट के दौरान शिखर ने भी हिंट दिया था कि वह फिर से प्यार में पड़ गए हैं और जब होस्ट से उनसे पूछा था कि वह लड़की कौन है तो उन्होंने कहा कि इस कमरे में जो सबसे सुंदर लड़की मौजूद है। इसके बाद कैमरे का फोकस सीधे सोफी पर हुआ था।

भारत के लिए लंबे समय तक खेलने वाले धवन ने भले ही अपनी निजी जिंदगी की दूसरी पारी की शुरुआत की घोषणा आधिकारिक रूप ने की हो लेकिन अप्रत्यक्ष रूप से अब वह आगे बढ़ने का हिंट दे रहे हैं। शिखर का अब एक नया वीडियो सामने आया है जिसमें वह एयरपोर्ट पर अपनी रूमर्ड गर्लफ्रेंड शोफी शाइन के साथ नजर आ रहे हैं।

विराट कोहली ने रचा इतिहास, टी20 में ऐसा करने वाले बने पहले बल्लेबाज

मुंबई। आईपीएल 2025 में मुंबई इंडियंस और आरसीबी के बीच मुकाबले के दौरान आरसीबी के पूर्व कप्तान विराट कोहली ने इतिहास रच दिया। विराट कोहली ने टी20 क्रिकेट में अपने 13 हजार रन पूरे कर लिए हैं। विराट कोहली टी20 में ये कारनामा करने वाले पहले भारतीय खिलाड़ी बने हैं। विराट कोहली ने 386 पारियों में ये बड़ा कारनामा कर दिखाया है। इसके साथ ही विराट कोहली अब क्रिस गेल, एलेक्स हेल्स और शोएब मलिक जैसे दिग्गज खिलाड़ियों की लिस्ट में शामिल हो गए हैं। विराट कोहली टी20 में 13 हजार रन बनाने वाले ओवरऑल 5वें खिलाड़ी बने हैं।

दक्षिण अफ्रीका ने जारी की सेंट्रल कॉन्ट्रैक्ट लिस्ट, हेनरिक क्लासेन लिस्ट से बाहर

नई दिल्ली (एजेंसी)। क्रिकेट दक्षिण अफ्रीका ने 2025-26 के लिए सेंट्रल कॉन्ट्रैक्ट लिस्ट जारी कर दी है। दक्षिण अफ्रीका ने सेंट्रल कॉन्ट्रैक्ट की लिस्ट में कुल 18 खिलाड़ियों को शामिल किया है। हैरानी की बात ये है कि इस लिस्ट में विस्फोटक बल्लेबाज हेनरिक क्लासेन को शामिल नहीं किया गया है।

क्रिकेट दक्षिण अफ्रीका ने एक नई पहल भी शुरू की है। इस कॉन्ट्रैक्ट लिस्ट में दो खास चीजे हैं। पहली ये है कि रासी वान डर डुसन और डेविड मिलर हाइब्रिड कॉन्ट्रैक्ट पर साइन करने वाले पहले खिलाड़ी बन गए हैं। ये ऐसा मॉडल है, जिसमें खिलाड़ी कोई खास सीरीज और आईसीसी टूर्नामेंट में देश के लिए खेलने को उपलब्ध रहें।

दूसरी बात ये है कि नई कॉन्ट्रैक्ट लिस्ट में तीन नए खिलाड़ियों को जोड़ा गया है। साथ ही एंडिले फेहलुकवायो और तबरेज शम्सी जैसे सीनियर खिलाड़ियों को भी सेंट्रल कॉन्ट्रैक्ट से बाहर कर दिया गया है। नया सेंट्रल कॉन्ट्रैक्ट 1 जून 2025 से 31 मई 2026 तक रहेगा।

बता दें कि, दक्षिण अफ्रीका ने हेनरिक क्लासेन को सेंट्रल कॉन्ट्रैक्ट से बाहर करने की वजह नहीं बताई है। क्लासेन के

अलावा कई और ऐसे खिलाड़ी हैं, जिन्हें सेंट्रल कॉन्ट्रैक्ट से बाहर किया गया है। इसमें कॉर्बिन बॉश, मैथ्यू ब्रीट्जके, एंडिले फेहलुकवायो और तबरेज शम्सी जैसे खिलाड़ी शामिल हैं। टेम्बा बावुमा, डेविन बेडिंघम, नांद्रे बर्गर, गेराल्ड कोएट्जी, टोनी डी जोरजी, रीजा हेंड्रिक्स, मार्को यानसेन, केशव महाराज, क्वेन मफाका, एडेन मार्कराम, वियान मुल्डर, सेनुरन मुथुसामी, लुंगी एनगिडी, कैगिसो रबाडा, रयान रिकेल्टन, ट्रिस्टन स्टब्स, काइल वेरिन, लिज़ाद विलियम्स।

पत्थर और कंक्रीट की बढ़ती मांगों के साथ बढ़ी जन समस्याएं

कोई हुआ बीमार तो कोई हुआ प्रदूषण का शिकार, मानक के विपरीत संचालित हो रही क्रेशर मशीनें

मलाई काटने में व्यस्त सरकारी अधिकारी

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जिले के बेला बनकुइयां के साथ ही कई अलग अलग क्षेत्रों में पत्थर की कई खदानें हैं जहां पत्थर की बढ़ती मांगों के साथ स्टोन क्रेशर भी अधिक संख्या में संचालित हो रहे हैं जिससे आसानी के साथ लोगों को घर बनाने की सामग्री मिल सके परंतु फिर भी यहां पर लोगों को हर रोज समस्याओं से दो-चार होना पड़ रहा है तथा क्षेत्र में स्टोन क्रेशर होने की वजह से प्रदूषण में विस्तार होता दिखाई देता हैं जिसके कारण अक्सर लोग प्रदूषण से होने वाली बीमारियों की चपेट में आ जाते हैं परंतु जिला प्रशासन लोगों की समस्याओं को देखते हुए कोई भी कड़े कदम उठाने को तैयार नही है।

दरअसल पत्थर और कंक्रीट की मांगों के चलते स्टोन क्रेशर तथा उद्योग लगाए गए हैं जिससे लोगों को आसानी से पत्थर और गिट्टी तो मिल रही है परंतु लोगों की इन सुविधाओं के चलते कई जन समस्याएं भी उत्पन्न हो रही है तथा आमजन को इन समस्याओं से हर रोज दो चार होना पड़ रहा। पत्थर और कंक्रीट की आवश्यकताओं को देखते हुए जिस प्रकार से माइंस संचालित हैं उससे प्रदूषण में भी लगातार विस्तार हो रहा है और प्रदूषण के चलते लोगों को बीमारियों का भी सामना करना पड़ रहा है जिससे क्षेत्र में अब हर घर से लोग बीमार होते जा रहे हैं मगर जिला प्रशासन इस ओर किसी भी प्रकार के ध्यान देने की बजाय पत्थर और कंक्रीट पर अपनी कमाई कर रहा है।

बताया जा रहा है कि माइंस और स्टोन क्रेशर को संचालित करने के लिए कई प्रकार के मापदंड बनाए गए हैं परंतु उन नियमों को ताक पर रखकर शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में माइंस का काम किया जा रहा है पत्थर निकालने के लिए खुदाई पर अलग-अलग नियम बनाया गया है लेकिन खनन माफिया नियमों को दरकिनार करते हुए खुदाई करते जा रहे हैं और खुदी हुई जमीन का मापन करने में एतराज करते हैं।

सड़कों की दोनों ओर बनी खाई देती हैं हादसे को आमंत्रण: बता दें कि खनन माफिया इस पूरे क्षेत्र में इस कदर हावी है की सड़को के दोनो ही तरफ पत्थर निकलने के लिए ब्लास्टिंग का काम करते हैं जिससे दोनों ही ओर खाई नूमे गड्ढे बना दिए गए और अब यह गड्ढे हादसे का कारण बन रहे हैं कई बार लोग इन गड्ढों में गिरकर काल के गाल में समा जाते हैं परंतु क्रेशर संचालकों को इसकी कोई परवाह ही नहीं है वहीं ग्रामीणों को आवागवन में भी काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। और इतना ही नही अब ये सड़के भी काफी कमजोर स्थिति में है कभी भी धराशाही हो सकती हैं..वही बेला और बनकुइयां में संचालित सैकड़ो स्टोन क्रेशरों द्वारा प्रदूषण नियंत्रण को लेकर किसी भी प्रकार के कार्य नहीं किए जा रहे हैं इसके कारण आम लोगों का बीमार होना भी आम बात हो गई है।

प्रदूषण विभाग भी झाड़ता है पल्ला: प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की मानें तो उनके द्वारा प्रदूषण के रोकथाम को लेकर हर रोज नई तकनीक के तहत काम किया जाता है तथा स्टोन क्रेशर वाले स्थानों पर पौधारोपण की व्यवस्था कराई जा रही है बावजूद इसके बीमारियां कम नहीं हो रही हैं ऐसे में खनिज विभाग और प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की लापरवाही ही कहें कि माइंस और प्रदूषण पर किसी भी प्रकार का नियंत्रण नहीं किया जा रहा है। कहीं ना कहीं अधिकारियों की सांठगांठ के चलते खनिज माफिया सक्रिय है और इन माफियाओं द्वारा लगातार हैवी ब्लास्टिंग कर धरती को छलनी करने में कोई कसर नहीं छोड़ी जा रही है जिसकी वजह से इसका खामियाजा मासूम जनता को उठाना पड़ता है।

कांग्रेस मेयर बोले-भाजपा कार्यालय जाना पाप नहीं

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष के साथ कांग्रेस महापौर की तस्वीर वायरल

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। महापौर अजय मिश्रा बाबा की एक तस्वीर ने राजनैतिक गलियारों में हलचल बढ़ा दी है। जिस तस्वीर में वो बीजेपी के कार्यालय में बैठे हुए नजर आ रहे हैं। फोटो के सेंटर में भारतीय जनता पार्टी मध्यप्रदेश का बड़ा सा बैनर भी लगा हुआ है। तस्वीर वायरल होने के साथ ही लोग कांग्रेस महापौर के कांग्रेस छोड़ भाजपा में जाने की अटकलें जताने लगे हैं। साथ ही महापौर को ट्रोल करते हुए सोशल मीडिया में पोस्ट कर रहे हैं।

जहां फोटो में भाजपा प्रदेश अध्यक्ष बीडी शर्मा भी बैठे हुए नजर आ रहे हैं। यह तस्वीर किसी महत्वपूर्ण बैठक की बताई जा रही है। जिसका प्रतिनिधित्व भाजपा प्रदेश अध्यक्ष बीडी शर्मा कर रहे हैं। उनके चारों तरफ अजय मिश्रा बाबा को छोड़कर बाकी अन्य भाजपा महापौर भी बैठे हुए नजर आ रहे हैं। प्रदेश अध्यक्ष के बगल में इंदौर महापौर पुष्यमित्र भार्गव बैठे हुए हैं। मंगलवार सुबह फोटो के सोशल मीडिया में वायरल होने के बाद चारों तरफ चर्चाओं का बाजार गर्म हो गया है।

जुलाई 2022 में कांग्रेस के महापौर प्रत्याशी अजय मिश्रा बाबा रीवा से भाजपा प्रत्याशी प्रबोध व्यास को हराकर महापौर बने थे। उन्हें 10 हजार 282 वोटों से जीत मिली थी। अजय मिश्रा बाबा को 47,987 जबकि भाजपा प्रत्याशी प्रबोध व्यास को 37 हजार 705 वोट मिले थे। वहीं आम आदमी पार्टी को 8 हजार 387 वोट मिले। यहां 24 साल बाद कांग्रेस महापौर पद जीत पाई थी।

कांग्रेस जिला अध्यक्ष राजेंद्र शर्मा के मुताबिक तस्वीर नगरीय निकाय और प्रदेश के सभी महापौरों के बैठक के दौरान की है। जहां महापौर अजय मिश्रा बाबा के साथ अन्य 16 महापौर भी उस बैठक में शामिल हुए थे। जिस तरह की बातें की जा रही हैं कि वो कांग्रेस छोड़कर भाजपा में जा सकते हैं। वास्तविकता में ऐसा कुछ भी नहीं है। महापौर के कांग्रेस छोड़कर भाजपा में जाने की बातें अफवाह हैं।

जानकारी के मुताबिक 7 अप्रैल को भोपाल में महापौर परिषद की एक बैठक थी। जिसकी कुछ तस्वीरें भी महापौर अजय मिश्रा बाबा ने अपने सोशल मीडिया हैंडल से शेयर की है। जिसमें उन्होंने मुख्यमंत्री मोहन यादव, नगरीय प्रशासन मंत्री कैलाश विजयवर्गीय और कैबिनेट मंत्री विश्वास सारंग के साथ अपनी फोटो शेयर की है। हालांकि उन्होंने भाजपा प्रदेश अध्यक्ष से मुलाकात की तस्वीर नहीं शेयर की है। तस्वीर पर चर्चा तब हुई जब तस्वीर वायरल हुई।

उधर मामले को बढ़ता देख कांग्रेस महापौर अजय मिश्रा बाबा ने मंगलवार शाम अपनी प्रतिक्रिया दी है। जहां उन्होंने कहा कि भाजपा कार्यालय में जाना कोई पाप नहीं है। मैं इंदौर से भाजपा महापौर पुष्यमित्र भार्गव के कहने पर ऑल इंडिया मेयर काउंसिल की तरफ से कुछ मांगों को लेकर बाकी महापौरों के साथ वीडी शर्मा से मुलाकात के लिए भाजपा कार्यालय गया था। जिसके बाद हम सभी वहां बैठकर चर्चा करने लगे।

501 बोरी चावल से भरा ट्रक जब्त, कालाबाजारी की आशंका

दस्तावेज नहीं दिखा पाया ड्राइवर, रीवा पुलिस ने खाद्य विभाग से मांगा प्रतिवेदन

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जिले के जवा थाना क्षेत्र में मंगलवार को एक ट्रक में अवैध रूप से ले जाए जा रहे खाद्यान्न को पुलिस ने जब्त किया। ट्रक में 501 बोरी चावल लोड था, लेकिन चालक कोई वैध दस्तावेज नहीं दिखा सका, जिसके चलते पुलिस ने ट्रक को जब्त करते हुए मामले को संदिग्ध माना है। अब खाद्य विभाग से रिपोर्ट मांगी गई है, जिसके आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

आईजी के निर्देश के बाद हो रही सघन चेकिंग: शासन-प्रशासन की सख्ती के बावजूद खाद्यान्न की कालाबाजारी पर लगाम लगती नहीं दिख रही है। हाल ही में नवागत आईजी द्वारा निर्देश जारी किए गए, जिसके तहत जिलेभर में वाहनों की सघन चेकिंग की जा रही है। इसी दौरान जवा पुलिस को मंगलवार को एक ट्रक संदिग्ध अवस्था में मिला, जिसमें बड़ी मात्रा में चावल लोड था।

जानकारी के अनुसार, ट्रक त्योंथर से चावल लेकर जवा के रास्ते रीवा की ओर जा रहा था। जब पुलिस ने रोककर पूछताछ की तो चालक खाद्यान्न के परिवहन या निर्यात से संबंधित कोई वैध दस्तावेज नहीं दिखा सका। इस पर पुलिस ने ट्रक को तुरंत जब्त कर लिया।

एडिशनल एसपी विवेक लाल ने बताया कि चालक दस्तावेज नहीं दिखा पाया। हमने वाहन स्वामी और संबंधित व्यापारी को थाने बुलाया था, लेकिन कोई भी अब तक उपस्थित नहीं हुआ है।

प्रथम दृष्टया यह मामला खाद्यान्न की कालाबाजारी से जुड़ा हुआ प्रतीत हो रहा है। खाद्य विभाग को पत्र भेजकर पूरे माल का विवरण मांगा गया है। रिपोर्ट आने के बाद अग्रिम कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

राष्ट्रीय पोषण पखवाड़ा का हुआ शुभारंभ

गर्भवती महिलाओं के स्वास्थ्य के लिये आंगनवाड़ी कार्यकर्ता व आशा कार्यकर्ता समन्वय से कार्य कर

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। सातवें राष्ट्रीय पोषण पखवाड़ा के शुभारंभ अवसर पर जिला पंचायत अध्यक्ष नीता कोल ने कहा कि गर्भवती महिलाओं के स्वास्थ्य के लिये घर के मुखिया को जागरूक करें ताकि उसकी सही ढंग से खान-पान व देखभाल हो सके। आंगनवाड़ी कार्यकर्ता ग्रामीण महिलाओं को जागरूक करें तथा उन्हें सही खानपान की समझाइश दें जिससे वह स्वयं एवं उनका होने वाला बच्चा भी स्वास्थ्य रहे।

कलेक्ट्रेट के मोहन सभागार में आयोजित शुभारंभ सह उन्मुखीकरण कार्यक्रम में कलेक्टर प्रतिभा पाल ने कहा कि आंगनवाड़ी कार्यकर्ता व आशा कार्यकर्ता समन्वय के साथ कार्य करें। अपने एवं अपने परिवार के पोषण की देखभाल के लिये आंगनवाड़ी केन्द्रों की सेवाएँ सही ढंग से दी जांय। प्रथम 1000 दिवसों में गर्भवस्था से लेकर शिशु के प्रथम 2 वर्ष के स्वास्थ्य तथा गर्भवती महिला का शत-प्रतिशत पंजीयन कराते हुए टीकाकरण, जांच आदि कार्य समय सीमा में किये जांय। उन्होंने कहा कि पोषण पखवाड़ा में किशोरी बालिकाओं, गर्भवती महिलाओं व बच्चों के स्वास्थ्य की सुरक्षा मुख्य उद्देश्य है। पोषण ट्रैकर में सही जानकारी नियत समय में भरी जाय तथा कुपोषित बच्चों को सुपोषित करने एवं मोटापे से बचाव हेतु स्वस्थ्य जीवन शैली अपनाने के प्रति जागरूक करें। उन्होंने बच्चों के प्रबंधन के प्रति समुदायों को संवेदनशील बनाने के लिये जागरूक किये जाने पर बल दिया। कलेक्टर ने अपेक्षा की कि विभागीय अधिकारी व कर्मचारी अपने दायित्वों का निर्वहन कर शासन द्वारा संचालित कार्यक्रम में खरे उतरेंगे।

कार्यक्रम में पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. ज्योति सिंह ने बच्चों के खान-पान के साथ ही उनमें इमोशनल एवं सोशल डबलपमेंट पर बल दिया। स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. मंजुल द्विवेदी ने कहा कि किशोरी लड़कियाँ सुपोषित रहेंगी तो वह स्वस्थ्य माँ बनेंगी और स्वस्थ्य बच्चे को जन्म देंगी। उन्होंने किचेन गार्डन विकास की बात कही। पीएचई के कार्यपालन यंत्री संजय पाण्डेय ने शुद्ध जल की उपयोगिता बताई। आयुर्वेद अधिकारी डॉ. शारदा मिश्रा एवं कृषि वैज्ञानिक सीजे सिंह एवं डॉ. किंजल सिंह ने अन्न के उपयोग व उसकी विशेषताओं की जानकारी दी।

कार्यक्रम में कुपोषण से मुक्त हुए तीन बच्चों को पोषण आहार किट प्रदान की गई। कलेक्टर ने विभागीय अधिकारियों व कर्मचारियों से अपेक्षा की कि इनके परिजनों को बच्चों के खान पान के विषय में समय-समय पर जानकारी दें। इस अवसर पर पोषण शपथ दिलाई गई। कार्यक्रम में जिला पंचायत सदस्य गुलबसिया जी सहित विभिन्न विभागों के जिला प्रमुख उपस्थित रहे। संचालन आशीष द्विवेदी सहायक संचालक ने किया तथा आभार प्रदर्शन जिला महिला एवं बाल विकास अधिकारी प्रतिभा पाण्डेय द्वारा किया गया। इस दौरान जीवेन्द्र सिंह, डॉ. शेष नारायण मिश्रा सहित महिला एवं बाल विकास विभाग के अधिकारी, कर्मचारी उपस्थित रहे।

समर्थन मूल्य पर गेंहू खरीदी के लिए पंजीयन आज तक

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य देने के लिए शासन द्वारा समर्थन मूल्य पर खरीद की जाती है। समर्थन मूल्य पर गेंहू खरीदी के लिए किसानों के पंजीयन की अंतिम तिथि 31 मार्च निर्धारित की गई थी, जिसे बढ़ाकर 9 अप्रैल कर दिया गया था। किसान समर्थन मूल्य पर गेंहू खरीदी के लिए 9 अप्रैल तक पंजीयन करा सकते हैं। किसान एमपी किसान एप, ई-उपार्जन पोर्टल तथा ई-उपार्जन मोबाइल एप पर अपना पंजीयन करा सकते हैं। शासन द्वारा वर्तमान वर्ष के लिए गेंहू का समर्थन मूल्य 2425 रूपये तथा सरकार द्वारा घोषित 175 रुपए प्रति क्विंटल बोनस के साथ किसानों से 2600 रुपए प्रति क्विंटल की दर से गेंहू का उपार्जन होगा। इस संबंध में कलेक्टर प्रतिभा पाल ने बताया कि रीवा जिले में गेंहू उपार्जन के लिए खरीदी केन्द्र निर्धारित कर दिए गए हैं। किसान इन खरीदी केन्द्रों में गेंहू उपार्जन के लिए पंजीयन करा सकते हैं। सभी किसान निर्धारित खरीदी केन्द्रों में अपना आनलाइन पंजीयन अवश्य करायें। पंजीकृत किसानों से ही समर्थन मूल्य पर गेंहू की खरीद की जायेगी। स्वयं के मोबाइल, कम्प्यूटर, खरीदी केन्द्र तथा ग्राम पंचायत कार्यालय में स्थापित सुविधा केन्द्र में पंजीयन की निःशुल्क व्यवस्था की गई है। किसान 50 रुपए का शुल्क देकर एमपी ऑनलाइन कियोस्क, कॉमन सर्विस सेंटर, लोक सेवा केन्द्र तथा साइबर कैफे में पंजीयन करा सकते हैं। कलेक्टर ने बताया कि पंजीयन के समय किसान आधार संख्या से लिंक बैंक खाते दर्ज करें जिससे ऑनलाइन भुगतान किया जा सके। पंजीयन कराने के लिए किसान को बोये गये खेत के खसरा नंबर की ऋण पुस्तिका, आधार से लिंक बैंक खाते की जानकारी देकर अपना पंजीयन करा सकते हैं। बटाईदार एवं सिकमी किसानों के लिए भी ऑनलाइन पंजीयन की व्यवस्था की गयी है। केवल पंजीकृत किसानों को ही गेंहू उपार्जन का लाभ दिया जायेगा।

जनसुनवाई में 90 आवेदन पत्रों पर हुई सुनवाई

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कलेक्ट्रेट के मोहन सभागार में आमजनता के आवेदनों पर सुनवाई के लिए साप्ताहिक जनसुनवाई का आयोजन किया गया। जनसुनवाई में अपर कलेक्टर सपना त्रिपाठी ने आमजनता के आवेदन पत्रों में सुनवाई करते हुए कहा कि सभी अधिकारी संवेदनशीलता के साथ जनसुनवाई के आवेदनों का निराकरण करें। आवेदनों में समुचित कार्यवाही करके सात दिवस में इनका निराकरण करें। आवेदन में की गई कार्यवाही की आवेदक को भी सूचना दें। जनसुनवाई के आवेदनों का प्रतिवेदन ऑनलाइन दर्ज करें। जनसुनवाई में आमजनता से प्राप्त 90 आवेदन पत्रों पर सुनवाई की गई। संयुक्त कलेक्टर पीके पाण्डेय, तहसीलदार मनोज शुक्ला तथा एसएलआर सहित सभी संबंधित अधिकारी जनसुनवाई में उपस्थित रहे। जनसुनवाई में दिलीप सिंह बघेल निवासी रीवा ने ईडब्ल्यूएस प्रमाण पत्र के लिए आवेदन दिया। अपर कलेक्टर ने एसडीएम हुजूर को आवेदन में कार्यवाही के निर्देश दिए। फूलकली मिश्रा निवासी बरा ने बिजली के बिल में सुधार तथा मीटर बदलने के लिए आवेदन दिया। अपर कलेक्टर ने अधीक्षण यंत्री विद्युत मण्डल को आवेदन में तत्काल कार्यवाही के निर्देश दिए। नीता बंसल निवासी मनगवां ने उज्ज्वला योजना के तहत गैस कनेक्शन के लिए आवेदन दिया। अपर कलेक्टर ने जिला आपूर्ति अधिकारी को आवेदन में कार्यवाही के निर्देश दिए। रमेश साकेत निवासी मड़वा ने बहुती नहर निर्माण के लिए अधिग्रहीत जमीन के मुआवजे के लिए आवेदन दिया। अपर कलेक्टर ने एसडीएम हुजूर को आवेदन में कार्यवाही के निर्देश दिए। जनसुनवाई में रविकुमार गुप्ता निवासी रीवा ने उनके दिवंगत पिता के वेतन निर्धारण का कोष एवं लेखा कार्यालय से सत्यापन कराने के लिए आवेदन दिया।

अपर कलेक्टर ने संयुक्त संचालक कोष एवं लेखा को एक सप्ताह में प्रकरण के निराकरण के निर्देश दिए। भैरव प्रसाद निवासी ग्राम खाझा पनवार ने सरकारी तालाब से अवैध कब्जा हटाने के लिए आवेदन दिया। अपर कलेक्टर ने तहसीलदार जवा को आवेदन में तत्काल कार्यवाही के निर्देश दिए। भगवानदास द्विवेदी निवासी ग्राम ढखरा ने नक्शा तरमीम के लिए आवेदन दिया। अपर कलेक्टर ने एसडीएम त्योंथर को आवेदन में कार्यवाही के निर्देश दिए। जनसुनवाई में पेयजल व्यवस्था, सीमांकन, जमीन से अवैध कब्जा हटाने, राहत राशि देने मजदूरी भुगतान सहित विभिन्न आवेदनों पर सुनवाई की गई।

बंदियों को निःशुल्क अपील करने की दी गई जानकारी

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। उच्चतम तथा उच्च न्यायालयों के निर्देशों के अनुसार केन्द्रीय जेल रीवा में विधिक साक्षरता शिविर का आयोजन किया गया। आयोजन में शासकीय पैनल अधिवक्ताओं द्वारा जेल में निरूद्ध बंदियों को उच्चतम तथा उच्च न्यायालयों में निःशुल्क अपील किये जाने के संबंध में विस्तृत जानकारी दी गयी। बंदियों को नवीन भारतीय न्याय संहिता तथा भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता की जानकारी भी प्रदान की गयी। इस अवसर पर न्यायाधीश तथा सचिव समीर कुमार मिश्रा द्वारा जेल के अस्पताल, बैरकों तथा रसोई घर का भ्रमण कर निरीक्षण किया गया। शिविर में विधिक सेवा प्राधिकरण के जिला विधिक अधिकारी अभय मिश्रा, अधिवक्ता अमरज्योति गुप्ता, दीपक गुप्ता, शिवशरण सिंह, उमेशबहादुर सिंह, रामकृष्ण गौतम तथा अनीशमणि पाण्डेय द्वारा बंदियों को विधिक सहायता से संबंधित जानकारी दी गयी। शिविर में उप जेल अधीक्षक संजीव कुमार गेंदले, उप जेल अधीक्षक योगेश परमार, सहायक जेल अधीक्षक पूजा मिश्रा, शिक्षक राजीव तिवारी, पैरालीगल वालेंटियर तथा जेल का स्टाफ उपस्थित रहा।

नरवाई न जलाने तथा इससे जैविक खाद बनाने की सलाह

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कृषि विभाग द्वारा जिले के किसानों को गेंहू तथा अन्य फसलों को काटने के बाद बचे हुए अवशेष (नरवाई) नहीं जलाने की सलाह दी गई है। इस संबंध में उप संचालक कृषि यूपी बागरी ने कहा है कि नरवाई जलाने से एक ओर जहां खेतों में अग्नि दुर्घटना की आशंका रहती है। वहीं मिट्टी की उर्वरकता पर भी विपरीत असर पाता है। इसके साथ ही धुएँ से कार्बन डायआक्साइड की मात्रा वातावरण में जाती है जिससे वायु प्रदूषण होता है। मिट्टी की उर्वरा शक्ति लगभग 6 इंच की ऊपरी सतह पर ही होती है। इसमें खेती के लिए लाभदायक मित्र जीवाणु उपस्थित रहते हैं। नरवाई जलाने से यह नष्ट हो जाते हैं, जिससे भूमि की उर्वरा शक्ति को नुकसान होता है। नरवाई जलाने की बजाए यदि फसल अवशेषों को एकत्रित करके जैविक खाद बनाने में उपयोग किये तो यह बहुत लाभ दायक होगा। नाडेप तथा वर्मी विधि से नरवाई से जैविक खाद आसानी से बनाई जा सकती है। इस खाद में फसलों के लिए पर्याप्त पोषक तत्व रहते हैं। इसके आलावा खेत में रोटावेटर अथवा डिस्क हैरो चलाकर भी फसल के बचे हुए भाग को मिट्टी में मिला देने से मिट्टी की गुणवत्ता में सुधार होता है।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक/प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया ऑडीटर पब्लिकेशन प्रा.लिमि. राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से प्रकाशित, **संपादक संदीप द्विवेदी**, आर.एन.आई नं. 69082/97, डाक पंजीयन क्र.- म. प्र./ रीवा संभाग/ 46/2023-2025, प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9589645803, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com सभी विवादों का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।